

चेतना

अंक 29 वां सितम्बर 2018



“लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा”
“Dedicated to Truth and Public Interest”



कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) बिहार, पटना

चेतना परिवार



बैठे हैं (बायें से दायें) श्रीमती तान्या सिंह, व. उप महालेखाकार (प्रशासन) एवं
श्रीमती मणि के, महालेखाकार (लेख एवं हकदारी)।

खड़े हैं (बायें से दायें) मो० हाशिम अंसारी, व. ले. अ. -सह-प्रधान संपादक,
श्री पवन कुमार, स. ले. अ. (तदर्थ) -सह-सहायक संपादक,
श्री श्रीराम पाण्डेय, स. ले. अ. -सह-संपादक,
श्री अरूण मिंज, उप महालेखाकार (पेंशन एवं निधि),
श्री अभिषेक सिंह, उप महालेखाकार (लेखा, वी. एल. सी. एवं कार्य) एवं
श्री अभिजीत कुमार सिन्हा, स. ले. अ. -सह-सहायक संपादक।



चेतना

अंक-29वाँ (संयुक्तांक)

(अक्तुबर, 2017 से सितम्बर, 2018)

त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका 29वाँ अंक

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना
का कार्यालय, महालेखाकार भवन,
वीरचन्द पटेल मार्ग, पटना - 800001

चेतना के इ 29वें संयुक्तांक में प्रकाशित सभी रचनायें लेखकों/रचनाकारों के अनुसार उनकी मौफ़ि एवं अप्रकाशित हैं तथा इसमें दिए गये विचार/मंतव्य उनके अपने हैं। इससे किरप्रकार की सहमति/असहमति सम्पादक मण्डल की नहीं है।

साधिकार	:	महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना
प्रकाशन	:	‘चेतना’
प्रकाशक	:	महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना का कार्यालय, महालेखाकार भवन, वीरचन्द पटेल मार्ग, पटना - 800001
अंक-29वाँ	:	(अक्तुबर, 2017 से सितम्बर, 2018)
मुख पृष्ठ	:	बिहार संग्रहालय
मूल्य	:	राजभाषा हिन्दी की अनवरत सेवा
मुद्रक	:	जी0 बी0 प्रिन्टर्स, पटना

चेतना परिवार

संरक्षक
श्रीमती मणि के
महालेखाकार
(ले० एवं ह०), बिहार, पटना।

प्रकाशन परामर्शदातृ समिति,
श्रीमती तान्या सिंह,
वरिष्ठ उप महालेखाकार
(ले० एवं ह०), बिहार, पटना।

श्री अभिषेक सिंह,
उप महालेखाकार
(ले० एवं ह०), बिहार, पटना।

श्री अरुण मिंज,
उप महालेखाकार
(ले० एवं ह०), बिहार, पटना।

प्रधान सम्पादक
मो० हाशिम अंसारी
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

सम्पादक,
श्री श्रीराम पाण्डेय
सहायक लेखा अधिकारी

सहायक सम्पादक
श्री अभिजीत कुमार सिन्हा
सहायक लेखा अधिकारी

सहायक संपादक
श्री पवन कुमार,
वरिष्ठ लेखाकार

सहायक संपादक
श्री सुरेन्द्र दूबे,
लेखाकार

सहायक संपादक
श्री अभिषेक कुमार,
कनिष्ठ अनुवादक

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या

1	चेतना परिवार	ii
2	अनुक्रमणिका	iii
3	महालेखाकार का संदेश	v
4	वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) का संदेश	vi
5	उप महालेखाकार (लेखा, वी० एल सी० एवं कार्य) का संदेश	vii
6	उप महालेखाकार (पेंशन) का संदेश	viii
7	सम्पदकीय	ix
8	महालेखाकार कार्यालय में हिन्दी कक्ष की गतिविधियाँ 2017-18	x
9	पुरस्कार वितरण	xii

क्रम संख्या	रचना	रचनाकार श्री/मो/सुश्री/श्रीमती/	पदनाम	रचना का प्रकार	पृष्ठ संख्या
1	शाम होने को है	चंदन कुमार	लेखाकार	कविता	1
2	श्मश की आत्मा	श्रीराम पाण्डेय	सहायक लेखा अधिकारी	कहानी	2
3	परिचय	श्री सुरेश प्रसाद पिता- अंजनी कुमार	सहायक लेखा अधिकारी	कविता	5
4	संस्कार	चन्द्र किशोर तिवारी	सहायक लेखा अधिकारी	लेख	6
5	गुजरे पल	शिव शंकर तिवारी शाहपुरी	वरीय लेखाकार	कविता	9
6	दफा 302	अमरेन्द्र कुमार पाण्डेय	सहायक लेखा अधिकारी	हास्य कथा	11
7	गम तो ये है	राम सिंगार चौहान	सहायक लेखा अधिकारी (तदर्थ)	कविता	18
8	नफरत है.....	राम सिंगार चौहान	सहायक लेखा अधिकारी (तदर्थ)	कविता	19
9	मेरा साया	संजय कुमार ओझा	वरीय लेखाकार	गजल	22
10	बचपन की सीख	पिंकी कुमारी	सहायक लेखा अधिकारी (तदर्थ)	कहानी	24
11	समय बड़ा बलवान	सुमन संगम	वरीय लेखाकार	कहानी	27
12	हिला सशक्तिकरण का ल आधार-स्त्री शिक्षा	धीरज कुमार	लेखाकार	निबंध	29
13	गजल	आफताब अंसारी	वरीय लेखाकार	गजल	30

14	किताब	नायला समरीन, पुत्री – आफताब अंसारी	वरीय लेखाकार	कविता	31
15	जीवन जलन	श्री सुरेश प्रसाद पिता- अंजनी कुमार	सहायक लेखा अधिकारी	कविता	32
16	पानी के लिए किसान और कांवरिया-इंद्र भगवान से प्रार्थना	बनवारी सिंह	लेखाकार-सह- केयरटेकर	कविता	33
17	सावन के गीत	श्री बनवारी सिंह	लेखाकार सह केयरटेकर	कविता	34
18	अंतिम गीत	संजय कुमार ओझा	वरीय लेखाकार	कविता	35
19	परिवर्तन	दयानन्द प्रसाद	वरीय लेखकार	लेख	37
20	हरि ओम- शुभ संकल्प	अनिल कुमार झा	से.नि.स.ले.अ.	उद्गार	41
21	संगीत चिकित्सा से तनाव का प्रबंधन	धीरज कुमार	लेखाकार	लेख	43
22	हम अकेले में क्यों गुम हैं	चंदन कुमार	लेखाकार	कविता	44
23	प्यास के मारे	चंदन कुमार	लेखाकार	कविता	46
24	जब तक तेरी याद और तू रहेगी	चंदन कुमार	लेखाकार	कविता	47
25	ट्रेन खुली की नहीं?	अंजनी कुमार	सहायक लेखा अधिकारी	संस्मरण	48
26	एक अनछुए शहर का सफर	उमेश चौधरी	वरीय लेखा अधिकारी	संस्मरण	52
27	यह पर्यावरण हमारा	भारती, पुत्री-संतोष कुमार सिंह	लेखाकार	कविता	55
28	जीवन	बंशीधर मिश्र	वरीय लेखा अधिकारी	कविता	57
29	आलसी ब्राह्मण	अदित्य कश्यप पुत्र संतोष कुमार सिंह	लेखाकार	कविता	59
30	गीता का माहात्म्य	मनमीत कुमार	वरीय लेखा अधिकारी	अध्यात्म	60





संदेश

आज बहुत ही हर्ष एवं उल्लास का विषय है कि हिन्दी पखवाड़ा के इस शुभ बेला में हमारे कार्यालय ने लगभग शत-प्रतिशत कार्य हिन्दी में सम्पन्न कर मुख्यालय का मान बढ़ाया है तथा राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार हिन्दी के प्रचार-प्रसार के कार्य में सराहनीय योगदान कर रहा है। गृह विभाग का भी इस दिशा में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

इस अंक में विभिन्न अधिकारियों, कर्मचारियों तथा उनके बच्चों द्वारा हिन्दी के प्रति अपने समर्पण, प्रेम, आदर एवं सम्मान का परिचय कविताओं, कहानियों, लेखों एवं संस्मरणों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। मैं उनकी इस भावना एवं सतत् प्रयास हेतु उन्हें साधुवाद देती हूँ तथा कामना करती हूँ कि हिन्दी के उत्थान में सभी अधिकारियों/कर्मचारियों का सतत् प्रयास अक्षुण्ण बना रहे।

शुभकामनाओं सहित।

मणि

मणि के

महालेखाकार (ले० व ह०)
बिहार, पटना।



संदेश

हिन्दी पत्रिका 'चेतना' का 29वां अंक इस कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों एवं संपादक मंडल के सहयोग से आपके समक्ष प्रस्तुत है। राजभाषा हिन्दी के उत्थान के लिए हम सब का दायित्व है कि सरकारी काम-काज में हिन्दी भाषा का अधिकाधिक प्रयोग करें।

हिन्दी भाव-सम्प्रेषण की सरल भाषा है। फलस्वरूप इसके माध्यम से पूरे राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधने की कोशिश की गई है, जो कारगर साबित होता दिख रहा है। भारत सरकार, राजभाषा विभाग द्वारा केन्द्रीय कार्यालयों एवं सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों/उपक्रमों में राजभाषा हिन्दी में कार्य करने की प्रतिबद्धता पर बल दिया गया है, जिसका सुखद परिणाम पूरे देश में परिलक्षित है।

कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को मैं अपनी तरफ से शुभकामनायें व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने हिन्दी में कार्य कर शत-प्रतिशत लक्ष्य प्राप्त किया एवं कार्यालय का सम्मान बढ़ाया है।
धन्यवाद।

जय हिन्द! जय हिन्दी!

तान्या सिंह
तान्या सिंह
वरिष्ठ उप महालेखाकार
(प्रशासन)



संदेश

हमारे कार्यालय की पत्रिका चेतना का नया अंक आपके सामने है। मैं इसमें प्रकाशित रचनाओं के लिये सभी रचनाकारों को बधाई देता हूँ। साथ ही संपादन एवं मुख्य पृष्ठ आवरण के लिये संपादक मंडल को भी हार्दिक शुभेच्छा।

हिन्दी हमारी मातृभाषा है। इस कारण हमारा दायित्व हो जाता है कि इसके अनवरत उत्थान के लिये पूरे मन से प्रयास किये जायें। जिस भाषा में हम सोचते हैं, स्वप्न देखते हैं, उस भाषा में लिख क्यों नहीं सकते? बस आवश्यकता है झिझक मिटाने की।

इस कड़ी के रूप में पत्रिका चेतना हमारे कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों; साथ ही साथ उनके नौनिहालों में अलख एवं ललक जगा रही है। सार्थक प्रयास हेतु संपादक मंडल को पुनः बधाई।

जय हिन्दी।

अभिषेक सिंह

अभिषेक सिंह,
उप महालेखाकार
(लेखा, भी०एल०सी०एवं कार्य)





सन्देश

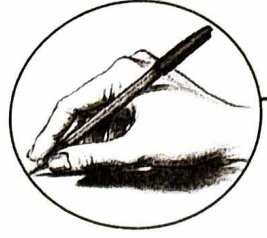
हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा ही नहीं अपितु सम्पूर्ण भारतवर्ष की सर्वमान्य एवं सर्वसुलभ भाषा है। भारत सरकार के कार्यालयों के साथ-साथ अन्य उपक्रमों में भी प्रयास किया जा रहा है कि यह भाषा देश के सभी नागरिकों तक पहुँचे, ताकि देश में किसी प्रकार की भिन्नता नहीं रहे। मोतियों की एक सुन्दर माला की तरह देश के विभिन्न प्रान्तों को एक सूत्र में बांधने की कोशिश इस भाषा के माध्यम से की गई है।

गृह मंत्रालय, भारत सरकार एवं हमारे मुख्यालय द्वारा जारी किए गये निर्देशों का पालन करते हुए हमारे कार्यालय की पत्रिका 'चेतना' के माध्यम से प्रयास किया गया है कि कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की अभिरुची हिन्दी में बनी रहे। राष्ट्रभाषा हिन्दी की प्रगति के लिए पत्रिका के माध्यम से कार्यालय के कर्मियों को हमारी शुभकामनायें।

धन्यवाद।

अरुण मिंज
उप महालेखाकार
(पेंशन एवं निधि)





हिन्दी दिवस पर हार्दिक शुभकामनाओं के साथ इस कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के 29वें अंक को हिन्दी प्रेमी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रसार के लिए यह पत्रिका कृतसंकल्प है। शासकीय कामकाज में राजभाषा हिन्दी के प्रति अभिरुचि सहित जागरूकता लाने एवं इसके प्रयोग में गति लाने के उद्देश्य से यह पत्रिका प्रकाशित की जाती रही है। पत्रिका के प्रचार एवं विकास के लिए सतत् प्रयत्न हो रहा है। तीव्र गति से हो रहे तकनीकी विकास के कारण प्रतिदिन नये शब्दों का प्रयोग हो रहा है। अतः विश्व की अन्य भाषाओं के साथ कदम-से-कदम मिलाकर चलना आवश्यक है, ताकि अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर हिन्दी भी शान से अपनी गरिमा एवं गौरव का स्थान पा सके।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा हिन्दी की प्रगति सराहनीय रही है, परन्तु लक्ष्य प्राप्ति के दृष्टिकोण से पूर्णतः संतोषप्रद नहीं कहा जा सकता। अतः हिन्दी भाषा के सम्पूर्ण विकास के लिए प्रतिदिन हिन्दी बोलने, पढ़ने और लिखने की आदत निःसंकोच रूप से डालनी पड़ेगी।

आज 'हिन्दी दिवस' के शुभ अवसर पर यह संकल्प लेना होगा कि सभी शासकीय कार्य राजभाषा हिन्दी में ही किये जायेंगे। साथ ही हिन्दी के व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु मार्ग में आनेवाली समस्त कठिनाईयों को दूर किया जायेगा।

इस कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से नम्र निवेदन है कि वे अपनी रचनायें, लेख, संस्मरण, निबन्ध एवं कविता इत्यादि प्रत्येक माह नियमित रूप से हिन्दी कक्ष को देते रहेंगे, ताकि पत्रिका अपने त्रैमासिक लक्ष्य को प्राप्त कर सके और पाठकगण इससे लाभान्वित हो सकें।

आदरणीय पाठकों से भी सादर अनुरोध है कि पत्रिका के संबंध में अपने विचार एवं सुझाव बेहिचक सूचित करेंगे। इसके अतिरिक्त इस पत्रिका को और अधिक उपयोगी एवं रोचक बनाने में अपनी रचना से इसे सुशोभित करने की कृपा करेंगे।

अंत में अपने संरक्षक माननीय महालेखाकार श्रीमती मणि के तथा परामर्शदातृ समिति, सम्पादक-मण्डल के सदस्यों एवं समस्त रचनाकारों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ, जिनके अपार स्नेह एवं सहयोग से यह पत्रिका प्रकाशित हो पा रही है। पत्रिका में सुन्दर चित्रांकन एवं सफल मुद्रण के लिए सामान्य अनुभाग की भूमिका भी अत्यंत सराहनीय रही है। उन्हें 'चेतना परिवार' की ओर से कोटि-कोटि धन्यवाद! पत्रिका में त्रुटि नहीं हो, इसका पूरा प्रयास किया गया है, तथापि यदि कोई त्रुटि रह गई हो, तो उसके लिए क्षमा याचना है। इसके लिए विज्ञ पाठकगण मार्ग दर्शन कराने का प्रयास करेंगे। अपनी ओर से सभी पाठकों और रचनाकारों को पुनः बधाई, साधुवाद।

जय हिन्द, जय हिन्दी।

श्रीराम पाण्डेय,
(संपादक)

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के द्वारा सरकारी काम के हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए हर वर्ष की तरह इस के महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना के कार्यालय ने अपेक्षित लक्ष्य प्राप्त करने में जो प्रगति की है, उसका विवरण निम्नांकित है:-

1. राजभाषा अधिनियम 3(3) का अनुपालन:

राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अन्तर्गत वर्ष 2017-18 में कुल 1 दस्तावेज जारी किये गये, जिनमें सभी हिन्दी/द्विभाषी में जारी किए गये। अंग्रेज जारी किए गये दस्तावेजों की संख्या 2 रही।

2 हिन्दी पत्राचार :

वर्ष 2017-18 के दौरान इस कार्यालय में हिन्दी में प्राप्त कुल पत्रों की संख्या 1,13,100 थी, जिनमें से 67,651 के उत्तर हिन्दी में दिए गये। शेष पत्रों के उत्तर अंग्रेज में दिए गये। कार्यालय द्वारा हिन्दी में भेजे गये पत्रों की प्रतिशतता 100 प्रतिशत रही।

3 राजभाषा कार्यान्वयन समिति:

वर्ष 2017-18 में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 4 बैठकें नियमित रूप से आयोजित की गई, जिनमें राजभाषा के कार्यक्रम एवं नीतियों के क्रियान्वयन पर विचार-विमर्श किया गया। अधिकांश निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति की गई।

4 हिन्दी कार्यशाला:

वर्ष 2017-18 के दौरान इस कार्यालय में 6 हिन्दी कार्यशालाएँ चलाई गईं, जिनमें कार्यालय के 50 अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया गया।

5 हिन्दी पुरस्कार योजना:

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के निदेशानुसार वर्ष 2017-18 के दौरान मूल हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को हिन्दी दिवस के अवसर पर नकद पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया।

6 हिन्दी-पखवाड़ा समारोह का आयोजन:

वर्ष 2017 में 01 सितम्बर, 2017 से 14 सितम्बर 2017 तक हिन्दी पखवाड़ा समारोह का बृहत् आयोजन किया गया। पखवाड़ा के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएँ यथा-निबंध-प्रतियोगिता, प्रारूप-लेखन एवं संक्षेपण प्रतियोगिता, हिन्दी-प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता इत्यादि आयोजित की गयी। विभिन्न प्रतियोगिताओं में

प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को 'हिन्दी दिवस' के उपलक्ष्य पर पारितोषिक प्रदान कर सम्मानित किया गया।

7 हिन्दी शिक्षण योजना:

इस कार्यालय में अधिकारियों/कर्मचारियों के राजभाषा हिन्दी के ज्ञान की स्थिति बहुत अच्छी है। यहाँ 117 अधिकारी एवं 564 कर्मचारी हैं जिन्हें हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है। यहाँ सभी हिन्दी में ही कार्यालय का कामकाज करते हैं। यहाँ 10 टंकक तथा 57 डाटा एंट्री ऑपरेटर हैं, जिनमें 7 डाटा एंट्री ऑपरेटर प्रशिक्षण के लिए शेष हैं।

8 हिन्दी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन:

इस कार्यालय में लगभग शत प्रतिशत हिन्दी में टिप्पण एवं प्रारूप लेखन किया जाता है। वर्ष 2017-18 के दौरान इस कार्यालय में कुल 50,776 संचिकाएँ खोली गई, जिनमें 50,421 संचिकाओं में हिन्दी में टिप्पणियाँ लिखी गई।

इस प्रकार इस कार्यालय द्वारा कुछ लक्ष्यों को छोड़कर वार्षिक कार्यक्रम के अधिकतर लक्ष्यों को प्राप्त कर लिया गया है, जिसकी समीक्षा राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकों में की जाती रही है। आशा है, आगामी सत्र में भी लक्ष्यों की पूर्ति शत-प्रतिशत की जा सकेगी।

+++++

पुरस्कार वितरण वर्ष-2017

हिन्दी पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा अति उत्कृष्ट भाग लिया गया, जिसमें सर्वश्रेष्ठ प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किया गया, जिनका विवरण निम्न प्रकार है

क्र. सं.	कार्यक्रम	श्रेणी	प्रतिभागियों के नाम
1	निबंध प्रतियोगिता	प्रथम	श्री उदय नारायण प्रभाकर (लेखाकार), (ले० एवं ह०) कार्यालय
		द्वितीय	श्री नृपेन्द्र कुमार नं०-2 (व०ले०प०), (लेखापरीक्षा कार्यालय)
		तृतीय	श्री रंजीत कुमार, (स०ले०अधिकारी त०), (ले० एवं ह०) कार्यालय
2	प्रारूप लेखन एवं संक्षेपण	प्रथम	श्री नृपेन्द्र कुमार नं०-2 (व०ले०प०), (लेखापरीक्षा कार्यालय)
		द्वितीय	श्री अभिजीत कुमार साहू, (लेखापरीक्षक), (लेखापरीक्षा कार्यालय)
		तृतीय	श्री अंजनी कुमार (स०ले०अधिकारी), (ले० एवं ह०) कार्यालय
3	बच्चों का काव्य पाठ	प्रथम	प्राची श्री, पुत्री-श्रीमती नीतु कुमारी (स०ले०अधिकारी), (ले० एवं ह०) कार्यालय
		द्वितीय	अग्रिता प्रभाकर, पुत्री- श्री उदय नारायण प्रभाकर (लेखाकार), (ले० एवं ह०) कार्यालय
		तृतीय	अराध्या सिंह पुत्री- श्री विश्वपति सिंह (स०ले०प०अ०), (लेखापरीक्षा कार्यालय)
4	कम्प्यूटर पर हिन्दी टंकण प्रतियोगिता	प्रथम	रंजय कुमार शर्मा (एम०टी०एस), (लेखापरीक्षा कार्यालय)
		द्वितीय	शंकर लाल सिंह, (व० लेखाकार), (ले० एवं ह० कार्यालय)
		तृतीय	श्री देव प्रकाश केशरी (व० लेखाकार), (ले० एवं ह० कार्यालय)
5	स्वरचित काव्य पाठ प्रतियोगिता	प्रथम	श्री मो०दानीश (क०अनुवादक), (लेखापरीक्षा कार्यालय)
		द्वितीय	श्री भुवन भास्कर (व०ले०प०अ०), (लेखापरीक्षा कार्यालय)
		तृतीय	श्री विश्वपति सिंह (स०ले०प०अ०), (लेखापरीक्षा कार्यालय)
6	हिन्दी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता	प्रथम	श्री सन्नी सिन्हा (व०ले०प०), (लेखापरीक्षा कार्यालय)
		द्वितीय	श्री विकास कुमार सिंह (व०ले०प०), (लेखापरीक्षा कार्यालय)
		तृतीय	श्री अमन्त कुमार (व०ले०प०), (लेखापरीक्षा कार्यालय)
7	भाषण प्रतियोगिता	प्रथम	श्री मो०दानीश (क०अनुवादक), (लेखापरीक्षा कार्यालय)
		द्वितीय	श्री आशीष कुमार (स०ले०अधिकारी), (ले० एवं ह०) कार्यालय
		तृतीय	श्री मनोज कुमार नं०-1 (व०ले०प०अ०), (लेखापरीक्षा कार्यालय)



चंदन कुमार
लेखाकार

शाम होने को है

शाम होने को है।
अकेले में कहीं खोने को है।
तू क्या समझेगी कि ये आखें
अकेले में कहीं रोने को है।
बेबस हूँ, लाचार हूँ।
खुद में एक अखबार हूँ।
पढ़ लो मुझमें पढ़ने वालों।
भूल भुलैया में कहीं खोने को हूँ।
में अकेला, रात अकेली।
में तो हूँ मिट्टी का ढेला।
कोई कुम्हार चाहिए
नहीं तो अस्तित्व खोने को हूँ।
आ जाओ वापस
तन्हा अकेला रोने को हूँ।





श्रीराम पाण्डेय
सहायक लेखा अधिकारी

श्मशान की आत्मा

पूरे परिवार के साथ तारापीठ घूमने का कार्यक्रम तय हुआ। बेटी की सबसे ज्यादा ललक थी श्मशान देखने की। यद्यपि मेरी इच्छा नहीं थी, परंतु उसकी उत्कंठा मुझपर भारी पड़ गई और हम सब उसके लिये तैयार हो गये। तारापीठ में अत्यधिक भीड़ होती है, लेकिन हमारे जान-पहचान के श्यामल पंडाजी के कारण हमें ज्यादा जद्दोजहद नहीं करनी पड़ी। बड़े ही मनोयोग से उन्होंने हमें माँ तारा के दर्शन करवाये। आजतक जहां भी मैं देवी-देवताओं के दर्शन करने गया हूँ, मुझे पूरी तृप्ति नहीं मिली है। मंदिर से लौटने के बाद लगता है कि जिस देवी या देवता का दर्शन करने मैं गया था, उनके पूरे स्वरूप को तो देख ही नहीं पाया। परंतु आज मैं संतुष्ट था, जय हो श्यामलजी की। धर्मभीरु नहीं होने के बावजूद मन गदगद हो रहा था। मेरी आँखें आद्र होकर संतुष्टि का प्रमाणपत्र दे गई थीं।

और अब बारी आई श्मशान दर्शन की। पंडाजी ने बताया कि यहाँ के श्मशान का बहुत महत्व है। जब तक कम से कम एक शव माँ तारा के प्रांगण में नहीं आ जाता, माँ का पट नहीं खुलता है। उन्होंने यह भी बताया कि यहाँ

का श्मशान माँ की आत्मा है और इस कारण श्मशान में जूता-चप्पल पहनकर नहीं जा सकते हैं।

फिर हमसब चल पड़े उस आत्मा के आत्मदर्शन करने। मैं अनुभव कर रहा था कि श्मशान के नाम से ही हममें से अधिकांश लोग डर रहे थे। पहुँचते ही जहाँ-तहाँ जलते हुए शवों की अधजली हड्डियाँ दिखने लगीं। जिन चिताओं को जलाया जा रहा था, उनके दुखी परिवारों की टकटकी लगाये उसी ओर देख रहे थे। शायद यह सोचकर कि उस रूप का दर्शन वे अंत में कर पाएंगे, अब कभी उनसे मिलना नहीं हो पायेगा। अचानक मेरी दृष्टि एक तीन-चार वर्ष की बालिका पर पड़ी। लग रहा था जैसे किसी सुंदर-सी गुड़िया को ईश्वर ने बालिका का रूप देकर बस थोड़े समय के लिये धरती पर भेज दिया हो और उसकी याद आ जाने पर पुनः स्वर्ग में लेकर चले गये।

उसके शव को जमीन में दफनाने के लिये रखा गया था। बगल में एक आदमी गद्दे पर हाथ रखे लगातार आँसू बहा रहा था। पट में पड़ी कभी उस निर्जीव को तो कभी आकाश की ओर निहारे जा रहा था। मैं समझ गया

अभागा उस बच्ची का पिता ही तो होगा। क्या बीत रही होगी बेचारे पर? मन में यही तो सोच रहा होगा कि क्षणभर पहले जिसकी तोतली आवाज सुन वह निहाल हो जाता था, जिसका नटखटपन, जिसकी मासूमियत उसका समस्त दुख हर लेती थी, वह वाचाल आज इतनी निष्ठुरता से चुपचाप क्यों पड़ी है? अब तुतलाती हुई वह उसे क्यों नहीं रिझा रही है?

पूछने पर मालूम हुआ कि खेलते-खेलते एक नाले में वह गिरकर डूब गई थी। आनन-फानन में लोग अस्पताल ले गये, जहाँ डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। एक आदमी रूआँसा होते हुए बताया कि उसकी माँ को तो पता भी नहीं है कि उसकी बिटिया अब दुनिया छोड़कर श्मशान की मिट्टी में समाहित होने चली गई है। मुझे बहुत पीड़ा होने लगी, “यह आप लोग क्या कर रहे हैं भाई, यहाँ लाने से पहले एक बार इसकी माँ को तो इसका मुँह दिखा देते”। अचानक मृतात्मा का पिता जोर-जोर से चिल्लाकर रोने लगा-“उस अभागी को क्या जवाब दूँगा मैं? पगली यही तो सोच रही होगी कि हॉस्पिटल से ठीक होकर उसकी लाइली दौड़ती हुई उसकी गोदी में समा जायेगी। अरे, कहाँ चली गई बेटी तू हमें छोड़कर” ?

मेरे साथ के लोग, यहाँ तक की मेरी बेटी भी वहाँ से चलने के लिये अब जिद करने लगी। मैं बहुत जल्द द्रवित एवं भावुक हो

जाता हूँ, यह मेरी बिटिया को पता है। परंतु मेरा मन वहाँ से जाने के लिये कतई नहीं कर रहा था। मृत्यु-परी के पास ही कुछ खिलौने, उसके वस्त्र आदि रखे हुए थे। एक बहुत ही सुंदर सी गुड़िया भी, जो देखने पर लगती थी कि अभी-अभी बोल पड़ेगी, पड़ी हुई थी। स्वर्ग की ओर प्रस्थान कर गई वह अभागी निश्चित रूप से उस गुड़िया से अगाध प्रेम करती होगी, जब तक जीवित रही होगी। शायद उसकी सारी स्मृति को खत्म कर देने के लिये ही वस्त्रादि और वह गुड़िया दफनाने के लिये लाये गये थे। कुरेदने पर पता चला कि उसकी माँ से यह कहकर खिलौने-कपड़े लाये गये थे कि उनको देखकर बिटिया जल्दी ठीक हो जायेगी। मुझे वह कहानी याद हो आई थी, जिसमें एक बंदरिया अपने मृत शिशु को जीवित समझकर अपने छाती से चिपकाये रहती है। जा रे अभागी।

लोग कहते हैं कि भगवान जो भी करते हैं, भले के लिये करते हैं। परंतु उस माँ-बाप को यह हृदय विदारक दुख देकर न जाने उन्होंने क्या भला किया होगा, मैं समझ नहीं पा रहा था।

मृत शरीर को ज्योंही वहाँ खोदे हुए गड्ढे में डाला गया, पिता जोर-जोर से रोने लगा। जब वस्त्रों एवं खिलौनों को उसमें डाला जाने लगा, वह अभागा उस गुड़िया को निकालकर अपने सीने से चिपका लिया।

श्री सुरेश प्रसाद
पिता- अंजनी कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

परिचय

गिराने से न गिरने को मैं हूँ।
डराने से न डरने को मैं हूँ।

उठा हूँ, शपथ है करना मुझे कुछ।
सच कहता, मुझे है करना अभी कुछ।
मदमत्त कुंजर की नाई चला हूँ।
विटप-विघ्न को नाश करने चला हूँ।

विपद-विघ्न को मैं हूँ कुमुद-बन समझता।
खड़ग दूसरों का मैं तृण ही समझता।
लहर सिंधु की भी, जवानी किसी की।
समझता नहीं कुछ लहू दुश्मनों की।

नहाने चला हूँ दुश्मनों के लहू से।
न लेना है कुंडल-कवच कर्ण ही से।
मेरी सूढ़ सचमुच क्या कुंडल से कम है।
मेरा वक्ष दुष्टों! कवच से क्या कम है।

न गर्जन है कम कुछ महावीर से ही।
न शक्ति है कम कुछ भी त्रिसिरारि से ही।
न कम है मेरी रोष लंका-दहन से।
जलाना है, रिपु-वास मुझको इसी से।

वचन सत्य सीता का लाना मुझे है।
हनू से न कम कुछ भी बनना मुझे है।
हृदय-राम को ही है कहना मुझे अब।
है चलना रिपु-भूमि लंका मुझे अब।

मेरे रोम-रोम ही बनेंगे कपि भालू।
बनेगी मेरी तर्जनी ही लखन लाल।
मेरे पैर के बल से भूचाल होगा।
मेरे हस्त से दुष्ट रावण मरेगा।

मेरी फूंक से ही बवंडर उठेगी।
इसी की बदौलत धरातल हिलेगा।
हिलेगा हृदय पापियों का इसी से।
ढहेगी भवन, वाटिका भी इसी से।

है देना मुझे त्राण सारी जगत को।
पड़े न विपद-विघ्न कुछ भी मनुज को।
रहे सुख से मानव जपे सर्वदा यह।
है परिचय यही, हाँ, रहे सर्वदा यह।





आजकल समाचारों में ऐसी-ऐसी विभत्स बलात्कारों, हत्याओं की घटनाएं सुनने एवं पढ़ने को मिलती हैं कि मन यह सोचने को मजबूर हो उठता है कि क्या कोई इन्सान ऐसा भी कर सकता है। ऐसी विभत्स घटनाओं को अंजाम वही व्यक्ति दे सकता है, जिसका पालन-पोषण सही परिवेश में नहीं हुआ हो तथा जिसमें बचपन से अच्छे संस्कार नहीं डाले गए हों। जब बच्चा जन्म लेता है, तभी से उसकी सीखने की प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है। परिवार बच्चे की प्रथम पाठशाला है, जहाँ से वह अच्छे संस्कार सीखता है। माँ उसकी पहली गुरु होती है। माता-पिता का यह दायित्व होता है कि वह अपने बच्चे को संस्कारवान बनायें। अपने बच्चे में अच्छे संस्कार का बीजारोपण करने के लिए पहले हम सभी को एक अच्छा इन्सान बनना होगा, जिससे हमारा बच्चा हमें ही अपना मार्गदर्शक और आदर्श मान सके।

आइये अब कुछ संस्कारों की चर्चा करते हैं जिसे हम अपने बच्चों को सिखा सकें तो वह निश्चित रूप से एक अच्छा इन्सान बनेगा।

1. **ईश्वर में आस्था:-** अपने बच्चे में यह संस्कार पैदा करना चाहिए कि वह ईश्वर में विश्वास रखे। ईश्वर में आस्था रखने से सही काम की प्रेरणा मिलती है। उसको यह विश्वास दिलाइये की ईश्वर सबकुछ देखता है। अतः हमें अच्छे कर्म करना चाहिए।

2. **माता-पिता का सम्मान करना:-** बच्चे को बचपन से ही यह शिक्षा मिलनी चाहिए की वह अपने माता-पिता का सम्मान करे, क्योंकि माता-पिता ही उसके मार्गदर्शक होते हैं। कोई भी कार्य करने से पहले अपने माता-पिता की राय अवश्य जानें। आदर्श और वीर बच्चों की कहानियाँ सुनायें और पढ़ने के लिए प्रेरित करें। जैसे- श्रवण कुमार की कहानी।

3. **सत्यनिष्ठा और ईमानदारी:-** अपने बच्चे के अन्दर सत्य बोलने की आदत डालनी चाहिए। इसके लिए माता-पिता को स्वयं भी इस रास्ते पर चलना होगा। ईमानदारी की आदत डालनी होगी, उनको यह बताना होगा कि सत्य और ईमानदारी के रास्ते पर चलकर ही आगे बढ़ा जा सकता है, क्योंकि ईमानदारी की नींव बहुत मजबूत होती है। भविष्य में कोई

भी हमारे बच्चे को पथ-भ्रष्ट नहीं कर सकता। इसे किसी उद्धरण के माध्यम से समझाया जा सकता है, जैसे- राजा हरिश्चंद्र की कहानी।

4. सहयोग की भावना:- अपने बच्चे के अंदर सहयोग और दूसरों की मदद करने की भावना का संचार करना चाहिए। यह आदत बचपन से ही पड़नी चाहिए। एक माता-पिता होने के नाते हमें अपने बच्चे को छोटे से ही अपने साथ काम पर लगाना चाहिए या उसको बताते रहें कि परिवार में सभी काम एक दूसरे की मदद से ही संभव हैं।

5. कर्तव्यनिष्ठा की भावना:- अपने बच्चों में यह संस्कार डालें कि वह कर्तव्यनिष्ठ हो। प्रत्येक व्यक्ति का अपने परिवार, देश, गुरु, विद्यालय, बड़ों तथा छोटों के प्रति अलग-अलग कर्तव्य होते हैं, जिसे निभाना पड़ता है।

6. प्रेम की भावना:- बच्चों में सभी के साथ प्रेम से रहने की भावना का संचार करना चाहिए। आपसी प्रेम और भाईचारे के बल पर वह परिवार, विद्यालय और समाज में प्रतिष्ठित स्थान पा सकता है। सभी उसे पसंद करेंगे और वह सभी के दिलों पर राज करेगा।

7. देश के प्रति सम्मान:- प्रत्येक बच्चे के अंदर देशभक्ति की भावना होनी चाहिए। बचपन से ही बच्चे के अन्दर यह संस्कार डालें कि उसका सबसे पहला कर्तव्य अपने देश के

प्रति है। उसके अन्दर देश के प्रति समर्पण की भावना होनी चाहिए। देशभक्ति की कविता और कहानियाँ सुनायें। आदर्श देशभक्तों के जीवन चरित्र के बारे में जानने के लिए जागरूक करें, जैसे- भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद आदि।

8. सहनशक्ति:- आजकल के दौर में बच्चों के पास सहनशक्ति का अभाव है, इसलिए माता-पिता होने के नाते आप अपने बच्चों को धैर्य रखने की आदत डालें, क्योंकि आगे के जीवन के लिए यह गुण होना आवश्यक है। उसको सिखायें कि छोटी-छोटी बातों पर उग्र न हो और जीवन के प्रति हमेशा सकारात्मक रुख रखे।

9. उज्ज्वल चरित्र:- अपने बच्चों के अन्दर यह संस्कार डालें कि वे अपने चरित्र के प्रति सजग रहें, क्योंकि एक बार चरित्र नष्ट होने पर वह दुबारा ठीक नहीं हो सकता। इस धोखे और फरेब की दुनियाँ में वह अपने आस-पास के फरेबी लोगों और दोस्तों से सावधान रहे।

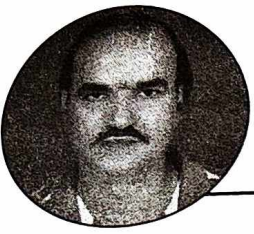
10. बुजुर्गों के प्रति सम्मान का भाव:- अपने बच्चों को घर के बड़े-बुजुर्गों की इज्जत करना सिखायें। उनकी सेवा करना, उनकी बात मानना, उनकी मदद करना तथा उनका सम्मान करना उनको आना चाहिए और यह तभी होगा जब हम बुजुर्गों का सम्मान करेंगे

क्योंकि बच्चे हमें ही देखकर सीखते हैं। वर्तमान समय में समाज के बुजुर्गों की स्थिति बहुत दयनीय है। अतः उनका समुचित आदर और सम्मान निश्चित होना चाहिए।

अपने बच्चों के व्यक्तित्व के निर्माण के लिए आपको उसकी शिक्षा-दीक्षा, अच्छी आदतों तथा नैतिक-मूल्यों के साथ-साथ इन

संस्कारों को बचपन से ही उनके अन्दर डालना चाहिए, तभी युवा होकर वह एक अच्छा एवं सफल इन्सान बनेगा और अपने देश का एक अच्छा नागरिक बनेगा, क्योंकि एक संस्कार और बुद्धिमान बच्चा ही भावी पीढ़ी का निर्माता और मार्गदर्शक हो सकता है।





काँटो में खिला वो फूल, अब नहीं खेल पाएगा।
खुशियों से भरा वो पल, कभी नहीं मिल पाएगा।

पलकों की खुशी, तुम्हीं से थी,
गुलशन की महक, तुम्हीं से थी,
परिंदों की चहक, तुम्हीं से थी,
यह जीवन धन्य, तुम्हीं से था।
न जाने तुम, कहाँ चली गई?
अब वो हर्षित मुखड़ा, नहीं खेल पाएगा।
खुशियों से भरा वो पल, कभी नहीं मिल पाएगा।

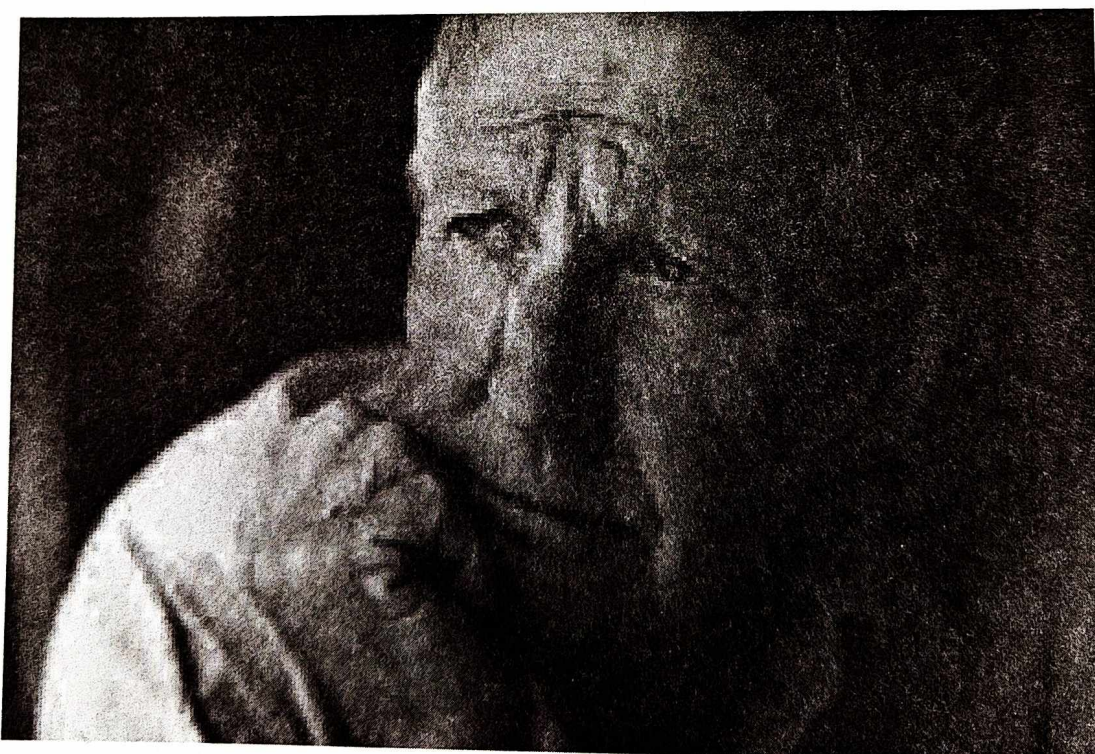
तुम प्रेरणा थी, तुम शक्ति थी,
मेरे बागों की, हरियाली थी,
तुम ममता थी, तुम समता थी,
तुम नम्रता थी, तुम क्षमता थी,
मैं आधा था, तुम पूरा थी।

बिछुड़न का वो पल हर पल मुझे सताएगा
काँटों में खिला वो फूल, कभी नहीं खेल पाएगा।

तुम्हारी याद में कवि, आँसू बहाता है,
अज्ञानतावश किए गए भूल पर, पछतावा करता है,
अतीतों में बिताए पल, मुझे रुलाएँगे,
जीवन में अब बसंत, फिर कभी नहीं आयेंगे।

काँटों में खिला वो फूल, अब मूर्छित हो जाएगा,
खुशियों से भरा वो पल, कभी नहीं मिल पाएगा।

(मेरी धर्मपत्नी की स्मृति में यह कविता उन्हें समर्पित है।)





हिन्दी कक्ष ने स्मारित किया है कि चेतना का २९ वां अंक प्रकाशित होने वाला है और आपकी रचना अभी तक नहीं मिली है। हिन्दी कक्ष अच्छी और उत्कृष्ट रचनाओं हेतु प्रयत्नशील है। मैं हिन्दी कक्ष के प्रतिनिधि की ओर मुखातिब होते हुए कहा कि काम के दबाव में लिखना थोड़ा मुश्किल है। और तो और, कम्प्यूटर और मोबाइल ने समाज को जितना भी लाभ पहुंचाया हो, लिखने की क्षमता को कम और समाप्तप्राय करने में इन दो उपकरणों का बड़ा ही योगदान है। वैसे भी कर्मचारी कोल्हू के बैल की तरह कार्यालय और घर के बीच ही चलता रहता है। इन दोनों को त्रिज्या बनाकर वह मात्र वृत्त पूरा कर सकता है।

हिन्दी कक्ष के प्रतिनिधि ने इससे सहमति जताते हुए कहा कि आपकी रचनाएँ नियमित रूप से पत्रिका को मिलती रही हैं। उन्होंने आगे कहा- कम्प्यूटर और मोबाइल ने भले ही लेखन क्षमता को कमतर किया है, परंतु यह लेख सामग्री भी तो उपलब्ध कराने में सहयोग करता है। इसपर मैंने कहा कि नेट पे अत्र-तत्र कुछ सामग्री खोजकर २-३ पृष्ठ

तो मैं भी दे ही दूंगा। इसपर उन्होंने कहा कि कुछ रचनाएँ हिन्दी कक्ष को प्राप्त हुई हैं जो प्रसिद्ध कथाकारों की कृतियों का अंश है और लोगों ने संभवतः नेट से डाउनलोड कर हिन्दी कक्ष को समर्पित किया है। हिन्दी कक्ष इसपर गंभीर है और ऐसी रचनाओं को कदापि प्रकाशित नहीं करेगा। प्रत्येक रचना के साथ यह प्रमाण पत्र देना अनिवार्य है कि समर्पित की जाने वाली रचना स्वरचित, अप्रकाशित एवं मौलिक है। स्वरचित और अप्रकाशित की बात तो समझ में आती है, लेकिन आप मौलिकता को कैसे निर्धारित करेंगे? मैं एक उदाहरण देता हूँ- महाकाव्य रामायण की पहली रचना महर्षि वाल्मीकि की आदि रामायण के बाद अनेक भाषाओं- कंबन रामायण (तमिल), कृतवाणी रामायण (बांग्ला), रामकेर (कम्पुचियन), श्री रंगनाथ रामायण (तेलुगू), यामा जगटाऊ (बर्मी) एवं रामचरितमानस (अवधि) में हुई, जिनकी कहानी लगभग समान है। यही नहीं रामचरितमानस आदि रामायण की तुलना में सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला ग्रंथ है। बगल के अनुभाग के महोदय हमारी बात-चीत ध्यान से सुन रहे थे। और उन्होंने टोकते हुए कहा-

"आप लोग क्या बहस कर रहे हैं"? अभी कल परसों की ही बात है, दूरदर्शन पर एक धर्म गुरु और एक महिला बहस करते-करते लप्पड़-थप्पड़ पर उतर आए। कहीं ऐसा न हो। नहीं- नहीं, हमलोग शालीनता से अपना विचार प्रकट कर रहे हैं और हम दोनों के बीच संबंध ऐसे प्रगाढ़ है कि ऐसी घटनाओं की कल्पना करना भी बेईमानी है। आखिरकार रचना समर्पित करने का आश्वासन लेकर वे चले गए।

फुर्सत मिलते ही मैंने चेतना की पुरानी रचनाओं का पुनरावलोकन किया। निश्चय किया कि त्योहार पर ही कुछ लिखा जाए।

प्राचीन भारतीय समाज चार वर्णों में विभक्त था। इनके कार्य निर्धारित थे। यद्यपि इस तथ्य पर इतिहासकारों में मतांतर है, फिर भी इसे स्वीकार किया जाता है। किंवदंतियाँ एवं जनश्रुतियाँ तो यह भी है कि चारों वर्णों के लिए अलग-अलग त्योहार निर्धारित थे। त्योहार क्रमशः सूर्योपासना (आधुनिक छठ), शक्ति उपासना (आधुनिक दशहरा), लक्ष्मी उपासना (आधुनिक दिवाली) एवं होली थे। सूर्योपासना का त्योहार तीन दिवसीय होता है और इस दौरान सड़कों, सरोवरों, नदी तटों एवं गली मोहल्ले आदि में स्वच्छता एवं पवित्रता नजर आती है। इन तीन दिनों में आपराधिक घटनाएँ भी ना के बराबर होती हैं। ठीक इसके

विपरीत होली के दिन सड़कों पर आलम रहता है कि निकलना मुश्किल हो जाता है। सर्वत्र फूहड़पन एवं अराजक-सा माहौल है। सारांशतः सूर्योपासना जहां संयम, पवित्रता का त्योहार है, वहीं होली धूम-धड़ाका, गुल एवं अराजकता का माहौल उत्पन्न करता है। छठ के अवसर पर समाज में मांस-मदिरा का खपत लगभग नहीं होता है। जहाँ होली में इसका खपत कई गुना बढ़ जाता है। मेरे खयाल से यही मांस-मदिरा माहौल को दूषित करता है। होली के दौरान एक घटना को मैं आपके साथ साझा करता हूँ।

घटना सन् २००१ के आस-पास की। इस घटना के मुख्य पात्र मेरे अभिन्न मित्र मान पी. हैं। उनका नामांकरण उनके असली नाम के प्रथमाक्षर को लेकर किया गया है। अब वे इसी नाम से जाने जाते हैं। पुरखों! इन्हें इतनी जमीन-जायदाद और व्यवसाय प्राप्त है कि इन्हें जीविका की कोई चिंता नहीं है। उनकी दो विशेषताएँ हैं- एक वे शराब बहुत बड़े शौकीन हैं, व्यवसाय में लाभ अथवा हानि दोनों ही अवसरों पर वे मदिरा का अवश्य देते हैं। व्यवसाय भी मदिरा का पूरा जीवन मदिरा के इर्द-गिर्द ही घूमता है। दूसरी विशेषता जो उनमें है, वही सामाजिक मान्यता प्रदान करती है। अपनी जान-पहचान वालों के शादी-ब्याह या अ

अवसर पर वे हमेशा आर्थिक सहयोग करते हैं। आधी व्यवस्था का आर्थिक वहन वो तो अवश्य करते हैं। इन दो आदतों की वजह से पिछले बीस वर्षों में उनकी संपत्ति एक चौथाई ही रह गई है। रही-सही कसर शराबबंदी ने पूरी कर दी। अब उनकी स्थिति उस गंजे के समान है, जो कभी अपने बालों पर फक्र करता था और अब मात्र कंघा ही उसके पास है।

घटना की पृष्ठभूमि मेरी मित्रता गंगटोक के एक महोदय से होने से बनी। मित्रता उनसे ऐसी गाढ़ी हुई कि मैंने उन्हें सपरिवार पटना आने का निमंत्रण दे डाला। उत्तर भारत के भ्रमण की ललक में १५-२० दिनों के अंतराल पर वे सपरिवार पटना पधारे। मैंने यथाशक्ति उनकी आवाभगत की। पटना समेत गया, नालंदा के भ्रमण से उनका परिवार अति प्रसन्न हुआ। लौटते वक्त उन्होंने बड़े ही ज़ोर डालकर सपरिवार गंगटोक आने का न्योता दिया। उन्होंने सिक्किम यात्रा का सर्वश्रेष्ठ समय, पहुँचने का तरीका आदि बताकर वहाँ जाने की तिथि निर्धारित कर दी। नियत तिथि को हमलोग वहाँ पहुँचे। खातिरदारी में उन्होंने कोई कमी नहीं छोड़ी। नाथुला पास, छोगुल लेक सहित कई पहाड़ी इलाकों के दर्शन से हमलोगों में नई स्फूर्ति, ताकत आ गई। उन्होंने एक दिन अपने करीबी लोगों की एक छोटी पार्टी अपने घर में रखी। क्या संस्कृति है, यहाँ बाप-बेटे एक साथ बैठने

में सकुचाते हैं और वहाँ पार्टी में बाप-बेटे साथ-साथ शराब पीकर नाच रहे हैं। जो कोई आता, दो घूंट शराब पीता और शरीर को लचकाता। हमलोग इन दोनों ही विद्याओं में शीफर हैं, ये बात वे जानते हैं। वे ये भी जानते हैं कि मैं बिलकुल अमत्त हूँ और मेरे परिवार के सदस्यों में शराब की गंध मात्र से वमन हो जाता है। फिर भी अपनी भाषा में उन्होंने हमलोगों का परिचय उन निमंत्रित लोगों से कराया। उनलोगों की भाव-भंगिमा यह बता रही थी कि वे लोग हमलोगों को किसी दूसरे ग्रह के प्राणी के समान समझ रहे थे।

यात्रा के अंतिम दिन मैं स्थानीय बाजार में गंगटोक से संबन्धित सामाग्री खरीदने के खयाल से गया। बाजार में ऐसी कुछ विशिष्टता वाली वस्तुएँ नहीं थी, हाँ शराब की दुकानें बहुतायत थीं। रंग-बिरंगी बोतलों में तरह-तरह की शराबें। श्रीमती जी की नजर एक दुकान पर गड़ी थी, पूछने पर बताई कि इन शराब की बोतलों को देखिये कैसी गणेश, लक्ष्मी की आकृति उभरी हुई है। हाथ में लेकर देखने पर दृष्टि और आकर्षक लगी। हमलोगों ने लक्ष्मी, गणेश आदि छवि वाले तीन-चार बोतलें खरीद लीं, योजना थी इसके शराब को फेंककर इन बोतलों का उपयोग गंगाजल अथवा पूजा में उपयोग में आने वाले समग्रियों को रखने के लिए किया जाएगा।

लौटते वक्त उन्होंने सपरिवार न्यू जलपाईगुड़ी से हमलोगों को विदाई दी। विदाई में उन्होंने परिवार के प्रत्येक सदस्य को उपहार दिया। उपहार में थी शराब की आकर्षक बोतलें। उनलोगों की आवाभगत और व्यवहार से उन उपहारों को वहीं फेंक देने की योजना कार्यरूप न ले सकी। यह सुधि अगले पाँच वर्षों तक नहीं ली गई।

लगभग पाँच वर्षों के बाद छज्जा पर रखे बैग का ख्याल घर के सफाई के दौरान आया। इस बैग के स्वाभाविक दावेदार श्रीमान पी. के अतिरिक्त कोई दूसरा कैसे हो सकता है। मन में फैसला किया कि ये उन्हें दे ही दी जाएँ। शुभस्य शीघ्रम, श्रीमान पी. एक दिन सड़क पर टहलते हुए नजर आए। मैंने पूछा, होली की तैयारी कैसी चल रही है? उन्होंने कहा बहुत ही खराब हालात हैं भाई। पीने-पिलाने वाले रहे ही नहीं। फिर भी होली तो मनेगी ही। इधर-उधर की बातों के बाद मैंने उन्हें बैग वाली बात बताई। अरे वाह! बहुत अच्छे, लेकिन होली के बाद देना, होली तो जैसे तैसे गुजर जाएगी। मैंने उन्हें आश्वस्त किया, जब चाहो आकर ले जाओ। पर उनमें सब्र न रहा और अगले ही दिन आ धमके। मैंने इस शर्त के साथ कि बोतलें जो आकर्षक हैं लौटा देनी हैं, उन्हें दे दी। मात्रा की अधिकता देखकर उनकी आखों में चमक आ गई। घर के एक कोने में बेकार पड़े इस बैग को अब एक

पारखी मिल गया था। बैग से एक-एक बोतल निकालते हुए एक अजीब सी तेजोमय आभा मुझे श्रीमान पी. के चेहरे पर बिखरती हुई दिखी। शराब की गुणवत्ता एवं मात्रा से वे अभिभूत थे और मैं प्रसन्न था, चलो किसी के लिए खुशी का सबब तो बना।

होली बीत गई, उम्मीद थी कि वे धन्यवाद अवश्य देंगे। तहकीकात पर पता चला कि अमुक तिथि को उन्होंने अपने मित्रों के साथ इसके सेवन का निर्णय किया है। होली के दूसरे दिन अखबार का प्रकाशन/वितरण पटना में नहीं होता है। उसके अगले दिन सुबह के सैर के बाद सपत्नीक चैन से बैठकर चाय के साथ साथ अखबार भी उलटने-पलटने लगा। प्रथम पृष्ठ पर ही शीर्षक था “जहरीली शराब से पच्चीस मौतें”। खबर नालंदा जिले की थी पर माथा ठनका। पत्नी ने कहा बैग में रखी शराब की बोतलों में से शराब को बहा दिया जाए एवं उसमें गंगाजल भर लिया जाए। मैंने कहा, अरे मैंने तो उसे श्रीमान पी. को दे दिया। नहीं, नहीं देना था। कुछ उलट-पुलट हो गया तो जिम्मेदार कौन होगा? वापस मांग लीजिये। फेंक देंगे।

अरे भाई चिंता न करो, पीने के अभ्यस्त हैं, जहर भी पचा जाएगा, कुछ नहीं होने वाला। कहने को तो मैंने ऐसा कह दिया, लेकिन मन के किसी कोने में अनहोनी की



आशंका घर कर गई। रसायनशास्त्र की कक्षा में शिक्षक जोर देकर कहते थे कि एथनोल जब मेथनोल में बदल जाता है तो शराब जहरीली हो जाती है और इसी मेथनोल की वजह से आखों की रौशनी, यहाँ तक कि जान भी चली जाती है। पाँच साल से रखा एथनोल क्या गर्मी के दिनों में प्रतिक्रिया कर मेथनोल तो नहीं बन गया, मन में बेचैनी का बीज तो अवश्य ही पनप गया।

श्रीमान पी. का घर मेरे घर से नजर आता है। बरामदे के किनारे जाकर उनके घर के बरामदे को देखा जा सकता है। नियत तिथि को देखा, देर रात तक उनके यहाँ चहल-पहल रही। उनके मित्रों का जमावड़ा रहा। शायद पार्टी का दिन था। चलो अच्छा हुआ। कम से कम मन का अंदेशा तो समाप्त हो जाएगा।

एथनोल को मेथनोल में बदलने का डर सिर्फ मुझमें ही नहीं था, मेरी श्रीमती जी के मन में भी यह डर समाया हुआ था। उन्होंने कहा- कल सुबह उनलोगों की गतिविधि, क्रियाकलाप पर नज़र रखनी होगी। हालांकि डर तो मेरे मन में भी था, फिर भी मैंने कहा अरे ऐसी कोई बात नहीं, निश्चिंत रहो। अगले दिन सुबह की सैर, चाय, अखबार से निपटने के बाद जिज्ञासा हुई, श्रीमान पी. के गतिविधि को जानने की। बरामदे के किनारे जाकर उनके बरामदे को देखा। मुख्य दरवाजा बंद था, कुछ

नज़र नहीं आ रहा था। मन में वही बेचैनी एथनोल-मेथनोल वाला। मन को समझाने के अंदाज में कहा देर तक जगा है, थोड़ी देर में उठ जाएगा। चिंता की कोई बात नहीं। समय के साथ चिंताएँ बढ़ने लगीं। ऊपर से श्रीमती का ताना- कह रही थी फेंक दो, दाता-दानी बनते हो, आफत खरीदे हो, भगवान जाने क्या होगा? झुंझलाते हुए मैंने कहा- अगर कुछ हो भी गया तो मेरी ज़िम्मेदारी कैसी, वह चलकर मेरे घर आया और ले गया है। श्रीमती जी ने कहा-यह षड्यंत्र माना जाएगा, शराब में जहर मिलाकर पिलाने का आरोप लगेगा। पूरी दुनिया में ढिंढोरा पीट कर शराब दिये हो। बच्चा-बच्चा जानता है, शराब हमलोगों ने ही दिया है। सीधे दफा ३०२ का मामला बनेगा, मज़ाक में नहीं लो। अंदर से तो मैं डरा हुआ था ही, दफा ३०२ ने मुझे अंदर से हिला दिया। करीब-करीब नौ बजने वाले थे, उनका मुख्य द्वार अभी भी बंद था। मन में बुरे-बुरे ख्याल आने लगे। बार-बार हमलोग उसके बरामदे की ओर ताकते कि अब दरवाजा खुले। आखिरकार लगभग साढ़े नौ बजे मैंने उनके घर जाकर दरवाजा खटखटाकर उसे उठाने का फैसला किया। श्रीमती मेरे इस विचार से एकदम भड़क गई, बोली अकल घास चरने गई है, सीधे फंस जाओगे। ऐसा भूलकर भी मत करो।

आखिरकार भारी बेचैनी और आशंकाओं के बीच मैंने पत्नी की सहमति से फैसला

किया कि उसके घर के पिछवाड़े की गली की ओर टोह लिया जाए। मन और दृष्टि उसके घर की ओर जमाये हुए धीरे-धीरे मैं उसके घर के पिछले हिस्से के गली पर चोर की भांति चलते-चलते पहुंचा। खिड़की बंद, कोई गतिविधि नहीं। दिल बैठ गया, हाथ-पैर में डर के मारे कंपन होने लगी। बगल के पड़ोसी ने जब मुझे टोका तो मानो मैं रंगे हाथ पकड़ा गया। उन्होंने कहा- आइये, इधर कैसे? यूं ही। उनके यहाँ बैठते ही शिकायती लहजे में कहा- ये जो आपका मित्र है, मुहल्ले में रहने लायक नहीं, उसके बाप-दादा का खयाल नहीं रहता तो उसे हमलोग यहाँ से भगा देते। आवारा है, पियाक है, असभ्य है, देर रात तक हँगामा करता है। सभ्यों के बीच रहने लायक नहीं। उनके इन शब्दों का वार मुझे विदीर्ण कर गया, जैसे-तैसे उनके घर से बहाना बना कर निकला। रास्ते में एक-दो महोदय ने भी श्रीमान पी. के विरुद्ध शिकायत का रोना रोया। घर लौटा, लटके चेहरे से श्रीमती ने ताड़ लिया कि कोई गतिविधि नहीं नजर आई। करीब-करीब साढ़े दस बजने को हुआ, उनके बरामदे की ओर हमलोग टकटकी लगाए रहे, कोई गतिविधि नहीं। ये ढाई-तीन घंटे किस मानसिक यंत्रणा से मैं गुजारा, उसको बयां करने के शब्द मेरे पास नहीं। निढाल होकर फर्श पर बैठ गया। शरीर बेजान सा हो गया और सोचने समझने की शक्ति समाप्त हो

गयी। मन में यह डर समा गया कि पी. के साथ कुछ अनहोनी हो गई है। इसकी जिम्मेदारी मेरी है। जेल, कचहरी ३०२ आदि मेरे मन-मस्तिष्क पर कौंधने लगी। श्रीमती एक कप चाय मेरी ओर बढ़ाती बोलती कि किसी अच्छे वकील की राय होगी, धैर्य से काम लेना होगा। उन्होंने कहा, दाढ़ी बनाकर नहा लो, ताकि गिरफ्तार भी करे तो शरीफ नजर आओ। दाढ़ी मैं वैसे भी षड्यंत्रकारी लगते हो। कुछ पहचान वाले से भी बात की। मैंने एक कह रहा था दफा ३०२ का मामला बनता, दफा ३०७ चलेगा। मन-मस्तिष्क यह बैठ गया था कि अब जेल जाना ही सामाजिक किरकिरी होनी तय है। जेल में घंटे बीतते ही कार्यालय हमें निलंबित देगा। कैसे घर-द्वार चलेगा, षड्यंत्रकारी कौन मदद करेगा? जी.पी.एफ. में जमा से बच्चे का ट्यूशन फी, घर किराया मुश्किल से बारह महीने ही चलेंगे। पूरी दुनिया कर्मचारियों को सुविधाभोगी समझती है, मैं दो बार महंगाई भत्ता की खबर अखबारों आदि में आती है तो दुकानदार हैं, फिर बढ़ा आपलोगों का वेतन। सरकार का खजाना। क्या है हम कर्मचारियों की सुरक्षा, दस बारह माह, जीवन भर कमाई।

ग्यारह बजने को है, अगल-बगल



घरों में रविवार छुट्टी का माहौल है और मेरे घर में भय, बेचैनी, यंत्रणा। हे! भगवान किस कर्म की सजा दे रहे हो।

मन-मस्तिष्क में विचार जो भी चल रहा हो, दृष्टि सामने पी. के बरामदे पर ही जमी थी। एकाएक दरवाजा खुला, हमलोगों को मानो कारु का खजाना मिल गया, गमले के ओट में छिपकर धड़कते दिलों से श्रीमान पी. के गतिविधि को देखने लगे। गले में तौलिया लपेटे वह सीधे हमारे घर की ओर चल दिये। मैं गौर से उसकी आखें, चाल देख रहा था। श्रीमती जी से बोला देखो आखें सही हैं, जिंदा है, अब सब ठीक है। श्रीमती जी ने कहा कि अगर वे कहें कि उनके दो-तीन दोस्त अंधे हो गए या मर गए, बीस लाख दो नहीं तो मामला पुलिस में ले जाऊंगा, तो क्या करोगे? पत्नी के कथन पर मैंने कहा-मैं पीछे के रूम में छिप जाता हूँ, तुम्हीं सामना करो इसका। ना, ना, अपनी बला आप जानो। मैं क्यूँ पडूँ बीच में। श्रीमान पी. मेरे बरामदे पर आ धमके। चूंकि बोलने की शक्ति मुझमें शेष न बची थी, बैठने का इशारा किया। दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था कि क्या बोलेगा...?

अमरेन्द्र भाई मजा आ गया पी कर। मैं

तो कहता हूँ जब कभी भी ऐसी जगह पर जाओ तो ऐसी सुस्वादु शराब के लिए मुझसे पैसे अवश्य लिया करो।

उनके ये शब्द ने मेरे अंदर की बेचैनी, यंत्रणा, भय सबको समाप्त कर दिया। खुशी से बोला “चाय पियोगे”।

क्यों अमृत के बाद जहर का प्रस्ताव दे रहे हो, धन्यवाद कहते हुए वह चला गया। जाते हुए हम सपत्नीक उसे देख रहे थे। मैं पत्नी को, पत्नी मुझे और हम दोनों उसे जाते हुए देखते रहे और मुस्कराते रहे।

फिर वायदे के अनुसार श्रीमान पी. ने बोतलें वापस भिजवा दीं। मैंने उन सारे बोतलों को एक कार्टून में पैक किया, उसे फेकने के ख्याल से। श्रीमती जी ने कहा, भगवान की छवि वाले बोतलों को फेंकोगे। हाँ फेंक देंगे, शराब की संगति ने इन्हें भगवान कहाँ रहने दिया, कितना कष्ट दिया। अंत में बचा भी तो लिया। संगति का असर भगवान पर! नहीं, फेंकना नहीं है। सोचता हूँ बड़े बुजुर्गों ने ठीक ही कहा है, शराब को हाथ नहीं लगाना चाहिए। आप भी इसे हाथ नहीं लगाएँ संकट, से दूर रहें।





राम सिंगार चौहान
सहायक लेखा अधिकारी (तदर्थ)

गम तो ये

मलाल नहीं, मेरे दिल के टूट जाने का।
गम तो ये है कि, तू भी साबूत बचा ही नहीं।

मलाल नहीं, मुझको तेरे घर से चले जाने का।
गम तो ये है कि, अब तक तुझसे घर कोई बसा ही नहीं।

मलाल नहीं, मेरे तहे दिल तक न उतर जाने का।
गम तो ये है कि, तूने रास्ता तक बख्सा ही नहीं।

मलाल नहीं, मेरे रूह के कत्ल हो जाने का
गम तो ये है कि, कैसे रूह तक तेरा काँपा ही नहीं।

मलाल नहीं, मेरे बुलंदियों तक न पहुँच पाने का।
गम तो है कि, तेरे दिल तक मैं पहुँचा ही नहीं।

मलाल नहीं, मेरे दुनिया को न समझ पाने का।
गम तो ये है कि, तेरे मंसूबे में समझा ही नहीं।

मलाल नहीं, तेरे काबिल न बन पाने का
गम तो ये है कि, था तू मेरे लिए बना ही नहीं।





राम सिंगार चौहान
सहायक लेखा अधिकारी (तदर्थ)

नफरत है...

न सिख से, ना ईसाई से
न हिन्दू से, ना मुसलमान से नफरत है
जो धर्म के नाम पे लोगो को बांटे
हर उस इन्सान से नफरत है।

दिखा के राह नफरत का,
बता के राह जन्नत का,
जो कत्ले आम करते हैं
वैसे हर हैवान से नफरत है।

दलाली शोभती है
बहुत से पेशों में,
है फिरते भेड़िये कई,
भेड़ों की वेशों में
शहीदों के कफन को जो न बख्शो,
हर उस शैतान से नफरत है।
न हिन्दू से, ना मुसलमान से नफरत है।

सजा के हम जहाँ रब को
बड़ी शिद्दत से रखते हैं,
छुपा के हम वहाँ सब से
किसी "काफिर" को रखते हैं।
है मौतें बाँटती अपनो में जो
हर उस मकान से नफरत है।
न हिन्दू से, ना मुसलमान से नफरत है।

है बख्शा रब ने सब को
नूर-ए-इबादत की दौलत,
करो बन्दों से प्यार
जब भी मिले थोड़ी सी मोहलत।
है, घोलती जो ज़हर नफरत फिज़ाओं में
मुझे ऐसी हर जुबान से नफरत है।
न हिन्दू से, ना मुसलमान से नफरत है।

बता ऐ रब मेरे लहू में तू
ऐसा क्या मिलाता है।
कोई छोटा, कोई बड़ा,
कोई ऊँच, तो कोई नीच बन जाता है।
रगों में घोलते हैं जो नफरत
हर उस बेईमान से नफरत है।
न हिन्दू से, ना मुसलमान से नफरत है।

हैं बैठे घात लगाये हर जगह
मेरे शहर के बन्दे,
हवस की खातीर बन जाते
जो खूनी शातीर दरिंदे,
हैं दूढ़ते धर्म को भी जो
उन बहसी दरिंदों में,
ऐसी सोच, ऐसी ईमान से नफरत है।
न हिन्दू से, ना मुसलमान से नफरत है।

न सिख से, ना ईसाई से,
न हिन्दू से, ना मुसलमान से नफरत है।
जो धर्म के नाम पे लोगो को बाँटे,
हर उस इन्सान से नफरत है।



मैं अंधेरे में यूँ ही सोया, बेखुदी का एक गाना जो गाया।
मेरा साया सुना राग मेरा, चल आहिस्ता मेरे पास आया।१।

चलते देखा उसे जब मैंने और खुद को लेटा हुआ पाया।
ढंढ हो गई शुरू मेरे मन में, है किसने किसको उठाया।२।

जीता है तन मरमर कर और जी-जीकर मरता है साया।
जान बाहर कहीं अपना रखकर, कैसे सो जाता है काया।३।

सुंदर साया क्यों जाने भयंकर, दिखा गुस्से में तमतमाया।
फिर अचानक नरमी वह लाकर, प्यार से मुझे थपथपाया।४।

तम के गोदी लेटा रहा तू, तुमने मुझको कभी न बुलाया।
मैं तो दासी हूँ रौशनी की, कर बगावत यहाँ चला आया।५।

देकर परिचय तुझे मैं अपना, यही मतलब है मैंने जताया।
तेरे दर्शन की इच्छा जग में, खींच मुझको यहाँ चला आया।६।

मैं आँखों का हूँ तेरा सपना, वह सपना तूझे नहीं भाया।
तेरी आँखों में रुक न सका मैं, भागकर बाहर हूँ आया।७।

जल चुकी मेरे मन की अरमां, बिरह ने मिलन को हराया।
दूसरे को मिलूँ मैं कभी ना, ना तुमसे कभी मिल मैं पाया।८।

अब जगने की तेरी है बारी, मुक्ति पाने का दिन मेरा आया।
जाके घूमो अब बाहर मेरे बिन, देखो बाहर उजाला है छाया।९।

आंसू उसके नहीं रुक रहे थे, मैं थोड़ा सुबक भी न पाया।
उस अभागन ने इतना ही कहकर, मुझको गले से लगाया।१०।





पिंकी कुमारी
सहायक लेखा अधिकारी (तदर्थ)

बचपन की सीख

बचपन से ही मेरे शौक छोटे हुआ करते थे, उनके पूरे होने से ही मैं खुश हो जाया करती थी। मैंने जब जो मांगा मुझे मिला, या यूं कहें की मेरे पापा-मम्मी ने मेरी हर इच्छा को पूरा किया। मेरे शौक वे अपनी जरूरतों को नजरंदाज कर के कैसे पूरा करते रहे, इस बात की मुझे भनक तक नहीं लगने दी। एक वृत्तांत प्रस्तुत करती हूँ। यह मेरे किशोरावस्था की उन यादों में से है, जिसे मैं कभी नहीं भूल सकती।

मेरे पापा सरकारी विद्यालय में शिक्षक हैं। चार बेटे-बेटियों की पढ़ाई-लिखाई और घर की जरूरतों में उनका वेतन कैसे चला जाता होगा, आप लोग कल्पना कर सकते हैं। साथ में बच्चों की हर-हमेशा नयी-नयी जिद भी होती थी, जिनमें से जो सही होता और जो पूरा करने लायक होता वो पूरा किया जाता। जैसा कि मैंने बताया, मेरे शौक छोटे हुए करते थे और मुझे कभी भी मना नहीं किया मेरे पापा ने किसी भी चीज के लिए। इसी वजह से इस बात का कभी एहसास नहीं हुआ कि वे कैसे नाप-तौल कर खर्च करते हुए सब का खयाल करते हैं।

पापा की एक स्कूटर हुआ करती थी, जो कुछ महीनों से खराब थी। बनवाने के पैसे नहीं थे, इसीलिए घर से विद्यालय तक की तीन-चार कि.मी. की दूरी वे पैदल ही तय कर के जाया करते थे। दीवाली का समय आ रहा था। मेरे पापा को स्कूल से बोनस मिला था और वे खुश थे कि उन पैसों से स्कूटर बनवा लेंगे और मिठाइयाँ, पूजा का सामान भी त्योहारों के लिए आ जाएगा।

अगले दिन से दीवाली की छुट्टियाँ शुरू हो गयीं। पापा घर से बाहर जा रहे थे, ताकि त्योहारों के लिए कुछ सामान ले आयें। मैंने उन से कहा कि मैं भी साथ चलती हूँ। वे मम्मी को ये कह कर मेरा हाथ पकड़ घर से निकले की शाम को स्कूटर बनवा लूँगा और छुट्टियों के बाद विद्यालय इसी से जाऊंगा।

बाज़ार में हम दोनों घूम रहे थे और जरूरत का सामान, जैसे पूजा की सामग्री, कुछ पटाखे, लक्ष्मी-गणेश की मूर्ति, घर के साज-सज्जा का सामान, मिठाइयाँ आदि खरीद रहे थे। मुख्य बाजार से गुजरते हुए मैंने एक कपड़े की दूकान में एक सुंदर सी पोशाक देखी जो पहली नजर मे ही मुझे बहुत पसंद



आई। मैंने पापा से वहाँ चलने को कहा। पापा ने कहा कि अभी दशहरा में ही तो सबको नए कपड़े दिलाये थे। पर मैंने उनकी बातों को नजरंदाज कर के वहाँ चलने को कहा। जब हम अंदर गए तो देखा की उस बड़ी सी दुकान में बहुत सारे कपड़े लगे हुए थे। अंदर प्रवेश करते ही हमारा स्वागत अतिथियों की तरह किया गया। एक लड़का जो वहाँ काम करता था, हमें लड़कियों की पोशाक वाले अनुभाग में ले गया। वहाँ बहुत सारे पोशाक थे, जिनमें से जो मैंने बाहर ही देखा था, मुझे बहुत पसंद आया। पापा चुप थे, शायद उन्हें एहसास था कि इस नयी दुकान में कपड़े महंगे होंगे। उनका सोचना सही था, उस पोशाक की कीमत उतनी थी, जितने मैं हम चारों भाई-बहनों के कपड़े आ जाते। जब दुकानदार ने उसकी कीमत बता कर पूछा की इसे डब्बे में बँधवा दूँ तो मैंने पापा की तरफ देखा। पापा ने कहा कि बेटा अभी तो हमने लिया था न! अभी क्या जरूरत, होली में फिर खरीद दूंगा। पर मैंने जिद नहीं छोड़ा। पापा किसी तरह मुझे समझा कर वहाँ से बाहर ले आए। मैंने कहा मुझे घर जाना है। खरीदारी बीच में ही छोड़ कर पापा मुझे घर छोड़ने आ गए। रास्ते में पापा ने मेरा उदास चेहरा देख मुझसे पूछा कि मिठाई खाएगी, या चलो कोल्ड-ड्रिंकस पिला दूँ। मैंने कहा कि मेरा कुछ खाने-पीने का मन नहीं है। फिर घर जाकर चुप-चाप अपने बिस्तर पर लेट गयी। मम्मी

ने पूछा कि क्या हुआ, मैंने कुछ नहीं कहा। पापा बाकी का सामान लेने फिर से बाज़ार चले गए। मैंने किसी से कोई बात नहीं की। दोपहर से शाम हुई और फिर रात। मैं वैसे ही रही। अगले दिन दीवाली थी, सब खुश थे, पर मैं नहीं। क्योंकि पहली बार ऐसा हुआ था कि मुझे किसी चीज के लिए मना किया गया हो। शायद इसीलिए की मेरे शौक ज्यादा बड़े हो गए थे, पहले से। पापा-मम्मी प्रयास कर रहे थे मुझे खुश करने की। पटाखे दिखाये, मिठाइयाँ और बहुत सारी बातें कह कर बहलाये। पर मुझ पर उस पोशाक का नशा ऐसा था कि मुझे और कुछ नहीं भा रहा था।

पापा और मम्मी के बीच कुछ बातें हो रही थीं। मैंने थोड़ा ही सुना जब पापा कह रहे थीं कि त्योहार के दिन ऐसे उदास रहेगी, यह मुझसे देखा नहीं जा रहा है। मैं कुछ इंतजाम करता हूँ। फिर वे बाहर चले गए और जब वापस आए तो मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। वे उस दुकान से मेरी जिद से हार कर मेरी पसंद वाली पोशाक ले आए थे। मेरी जिद के आगे हार गए थे पापा। मैंने उन्हें गले से लगाते हुए धन्यवाद दिया और सबको बताने के लिए भाग कर गयी। शाम हुई और मैंने उन कपड़ों को जब पहना तो मेरे पैर जमीन पर नहीं पड़ रहे थे। मैं स्वयं इतरा रही थी और अपने भाई-बहनों को चिढ़ा भी रही थी। पापा-मम्मी के चेहरे पर इस बात का सुकून था कि

मैं खुश हूँ। फिर भी एक झलक मजबूरी की दिख रही थी, जिसे वे सब की नजरों से छुपाने की कोशिश कर रहे थे। घर पर कुछ मेहमान आए थे और उन्होंने भी मेरी पोशाक की काफी तारीफ की। मैं खुश थी कि पापा ने मेरी बात मान ली। अगले दिन रविवार होने की वजह से विद्यालय बंद था। हम लोग घर में ही आराम कर रहे थे। मेरे चेहरे पर मुस्कान अब भी बरकरार थी।

सोमवार आया और हमारी छुट्टियाँ खत्म हो गयीं। विद्यालय जाने की बारी आई। पापा हम से पहले निकलते थे घर से। वे तैयार हुए और मैंने उन्हें जाते हुए देखा। वे पैदल ही जा रहे थे। मैंने उनसे पूछा कि स्कूटर से क्यों नहीं जा रहे हैं, उन्होंने कहा कि पैदल चलने से स्वास्थ्य ठीक रहता है और फिर यह कह कर वे चले गए। मैंने देखा की स्कूटर वैसे ही खराब पड़ी हुई है। मम्मी से पूछा तो उन्होंने बताया कि स्कूटर नहीं बन पायी, पैसे खर्च हो गए थे। मेरे मन में भरे उत्साह और खुशी की जगह अब आत्मग्लानि ने ले ली थी। मेरे एक नासमझी भरी जिद की वजह से पापा अपने जरूरत को पूरा नहीं कर पाये। उस पोशाक को देख कर अब मुझे यह एहसास हो रहा था कि

मुझसे कितनी बड़ी गलती हो गयी है और इस बात का बहुत पछतावा हो रहा था। पर मैं कुछ कर पाती इस काबिल भी नहीं थी।

उस वक़्त इस बात की अनुभूति हुई की माता-पिता अपने बच्चों की खुशी के लिए और उसके भले के लिए निरंतर प्रयासरत रहते हैं। उनके खाने-पीने, पढ़ने-खेलने से लेकर उनके शौक भी पूरा करते हैं। वर्तमान संदर्भ में कहा जाए तो कई बार इसके बदले में उन्हें बस उपेक्षा और तिरस्कार ही मिलता है। बच्चे उनकी कुर्बानियों को उनका कर्तव्य समझ कर अपने कर्तव्य से मुँह मोड़ लेते हैं।

वर्षों बीत चुके हैं उस घटना को घटित हुए। आज पुनः दिवाली है। मैं कार्यालय से घर आ गयी हूँ और बाज़ार से पापा के आने का इंतजार कर रही हूँ। उनके आते ही मैं एक बड़ा सा पैकेट उनके हाथ में रखती हूँ। पापा खोलकर देखते हैं, उस पैकेट में उनके और माँ के लिए कुछ कपड़े हैं। और खोलने पर उसमें से मेरी एक पोशाक नजर आती है। कुछ असमंजस के बाद पापा को सब कुछ याद आ जाता है। अरे! यह तो मेरी गुड़िया का उस दिवाली वाला कपड़ा है कहकर वे मुझे, अपनी गुड़िया को गले लगा लेते हैं।





सुमन संगम
वरीय लेखाकर

समय बड़ा बलवान

यह कहानी एक पेड़ और एक पत्थर की है। आबादी से दूर कच्चे सड़क के किनारे एक आस-पास पेड़ था और उस से सटे ही एक बड़ा पत्थर था। दोनों कई सालों से साथ थे। वहाँ आस-पास और कुछ नहीं था, इसीलिए दोनों आपस में बातें कर के दिन काटा करते थे। पेड़ पत्थर से कहता कि लोग मेरी कितनी कद्र करते हैं, दूर से चलकर आते हुए पथिक मेरे छांव में आकर बैठते हैं, मेरे फलों को तोड़ कर खाते हैं, मुझे धन्यवाद देकर जाते हैं। तुम्हारी तरफ कोई देखता भी नहीं। कभी-कभी तुमसे ठोकर खा कर लोग गिरते हैं तो तुम्हें गालियां देते हैं। मुझे कोई गाली नहीं देता। पत्थर मुस्करा कर जवाब देता - “मित्र! बिल्कुल सही कहा तुमने। पर मेरा समय भी बदलेगा”। पेड़ का जवाब होता कि तुम्हारा समय कैसे बदलेगा? तुम तो पत्थर ही रहोगे।

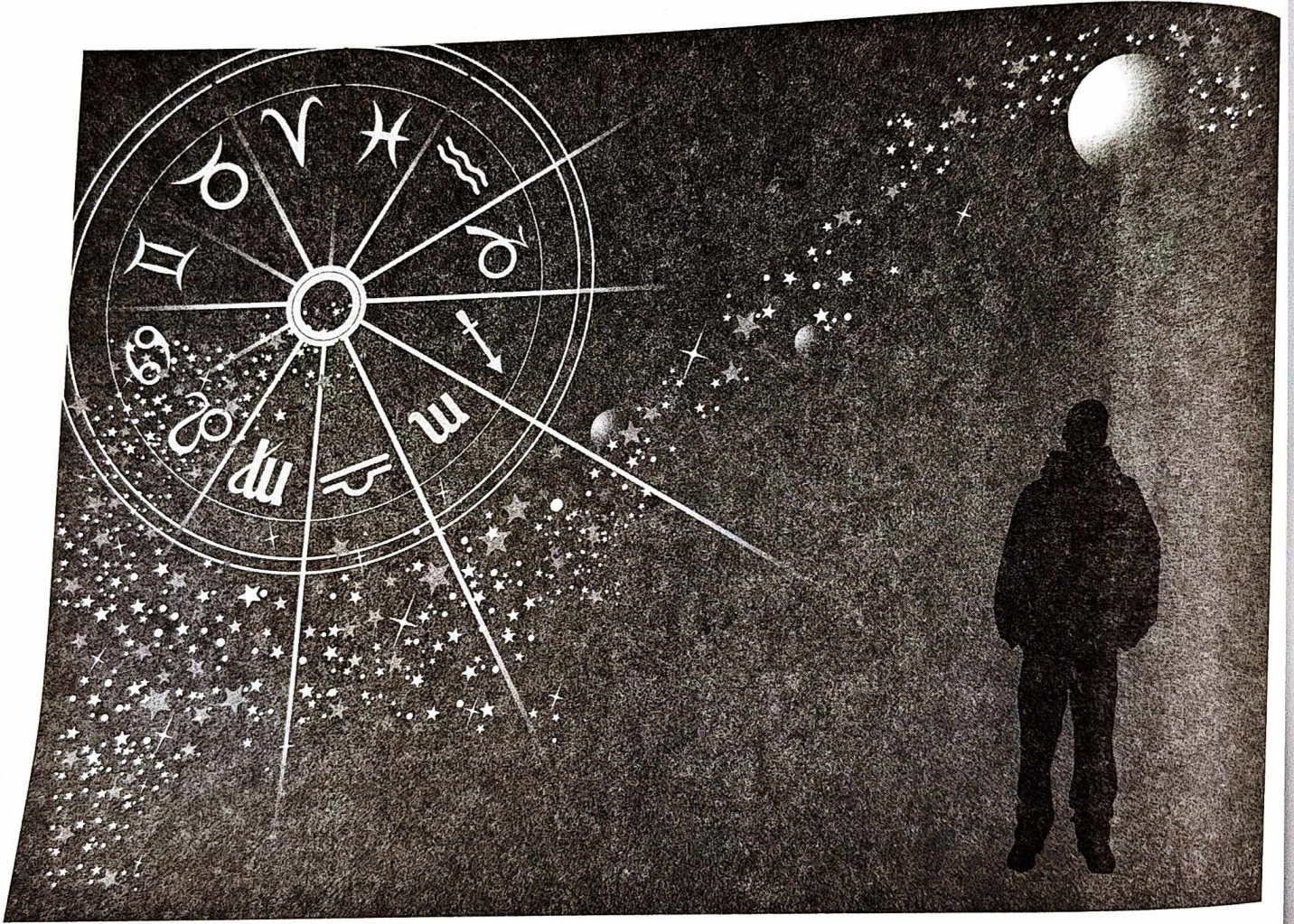
समय बीतता गया और एक दिन उस रास्ते से एक शिल्पकार गुजरा। दूर से चल कर आने की वजह से थक कर थोड़ी देर पेड़ की छांव में आराम करने की सोच कर बैठ गया। उसकी नजर जब उस बड़े से पत्थर पर पड़ी तो वह उसे थोड़ी देर तक निहारता रहा।

फिर वह वहाँ से चला गया। अगले दिन वह एक मोटर गाड़ी के साथ कुछ लोगों को लेकर आया। उन सब ने मिल कर उस पत्थर को गाड़ी पर रखा और चले गए। उस शिल्पकार ने उस पत्थर को तराश कर बड़ी मेहनत से एक सुंदर और भव्य भगवान की मूर्ति बनायी। मूर्ति की भव्यता देख कर बड़े मंदिर के पुजारी ने उसे उसी मंदिर में स्थापित करने की बात की। उस मूर्ति पर काफी महंगे हीरे-जवाहरातों से जड़े आभूषण पहनाए गए और स्वर्णिम पोशाक भी। फिर जरूरत आई एक खड़ाऊँ की, जिसे भगवान के चरणों में पहनाया जा सके। शिल्पकार को ध्यान आया कि जहाँ से उसने पत्थर को उठाया था वहीं पर एक पेड़ भी था। उसने उस पेड़ को काट कर मंगवाया और उसी से भगवान के चरणों के लिए खड़ाऊँ बनवाया और फिर मंदिर में उस मूर्ति को स्थापित कर दिया गया। उस पत्थर के भगवान रूपी स्वरूप के खूब जयकारे लगे, आरती उतारी गयी। इस सारे परिदृश्य के बाद उस पत्थर ने अपने चरणों में पड़े उस पेड़ से कहा- “मित्र! काल का चक्र जब चलता है, राजा को रंक और रंक को राजा बनने में समय नहीं लगता। इसीलिए जब आपके पास कुछ है तो उस पर गुरुर न

चेतना

करें और जिनके पास कुछ नहीं है उनका अपमान न करें। उस पेड़ को एहसास हो गया था कि समय से बड़ा कुछ भी नहीं है। न बुरे

समय में निराश होना चाहिए और न ही अच्छे समय में आत्मविभोर।



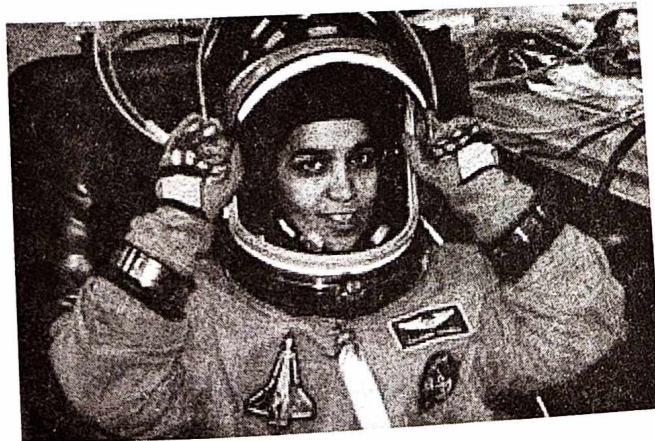


धीरज कुमार
लेखाकर

महिला सशक्तिकरण का मूल आधार- स्त्री शिक्षा

बालिकाओं को शिक्षित करना महिला सशक्तिकरण का एक सार्थक प्रयास माना जाता है। राष्ट्रीय स्तर पर सर्वशिक्षा अभियान के द्वारा किए जा रहे हस्तक्षेप से महिला सशक्तिकरण को एक नया बल मिला है। भारत जैसे विकासशील देश में पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं की साक्षरता दर में निरंतर हो रही वृद्धि को बालिका शिक्षा का एक प्रतिफल माना जा सकता है। 2011 के सर्वेक्षण के अनुसार हमारे देश में मात्र 65.46 प्रतिशत महिलाएं शिक्षित हैं। इसे अभी भी चुनौती माना जा सकता है। परिवार रूपी इस पाठशाला की प्रथम शिक्षिका 'माँ' होती है। इसलिए माँ का शिक्षित होना आवश्यक है। इसी उद्देश्य से संप्रति केंद्र तथा राज्य सरकारों ने मिलकर स्त्री शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए स्नाकोत्तर तक की शिक्षा स्त्रियों को निःशुल्क

प्रदान करने की योजना बनाई है, जो कार्यरत है। इतना ही नहीं, दसवीं तक की शिक्षा के लिए बालिकाओं को निःशुल्क साइकिल, किताबें आदि दी जा रही हैं। साथ ही आठवीं तक की बालिकाओं को दिन का भोजन निःशुल्क दिया जा रहा है। इसके अलावा छात्रवृत्तियाँ भी प्रदान की जा रही हैं। प्रधान मंत्री कौशल विकास योजना के द्वारा नारियों को रोजगारोन्मुख पाठ्यक्रम करने पर जोर दिया गया है, ताकि वे आर्थिक रूप से मजबूत हो सकें। अंत में राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त के द्वारा कही गई पंक्तियाँ सटीक प्रतीत होती हैं:-
“विद्या हमारी भी न तब तक काम में कुछ
आएगी,
अर्धांगिनियों को भी शिक्षा दी न जब तक
जाएगी”।





मो. आफताब अंसारी
वरीय लेखाकर

गजल

करीब बन्दे को, अपने खुदा जो पाता है।
तो कुछ वह दे के, कभी ले के आजमाता है।

वह शख्स रब की निगाहों में, कितना प्यारा है।
जो भूखे रहकर भी खुद, औरों को खिलाता है।

हमारा रिज़क भी, क्यों न हराम हो जाये।
पड़ोसी बच्चों को, भूखे गर सुलाता है।

गमों का बोझ जरा सा भी, सह नहीं सकते।
गुलाब काँटों में रह कर भी, मुस्कराता है।

खुद इसकी मुश्किलें, आसान क्यों न हो जायें।
जो दूसरों की मुसीबत में काम आता है।





नायला समरीन
पुत्री- मो. आफताब अंसारी
वरीय लेखाकर

किताब

सारी चीजों में सबसे प्यारी,
होती है किताब।
उलझे-उलझे हर सवाल का,
देती है जवाब।

इसको पढ़कर बन जाता है,
मूर्ख भी विद्वान।
अनपढ़ शिक्षित हो जाता है,
पा लेता है ज्ञान।

कोई छोटी, कोई मोटी,
होती है किताब,
कोई कठिन तो कोई सरल,
होती है किताब।

पढ़ना-पढ़ाना अच्छी आदत,
इसको तुम अपनाओ।
अध्ययन से बनते इंसान,
इससे न कतराओ।



मैं न इस भू पर रहूँगा।
द्वेष, ईर्ष्या, लोभ मद,
पाखण्ड का साम्राज्य है यह।
चोर, जालिम बढ़ रहे हैं।
मोह का साम्राज्य है यह।

प्राण कातर हो रहे हैं,
त्राण अब मिलता नहीं है।
तन-मन झुलसते जा रहे नित,
पाप की भट्टी तले।

इसलिए प्रभु से कहूँगा,
मैं न अब इस भू पर रहूँगा।

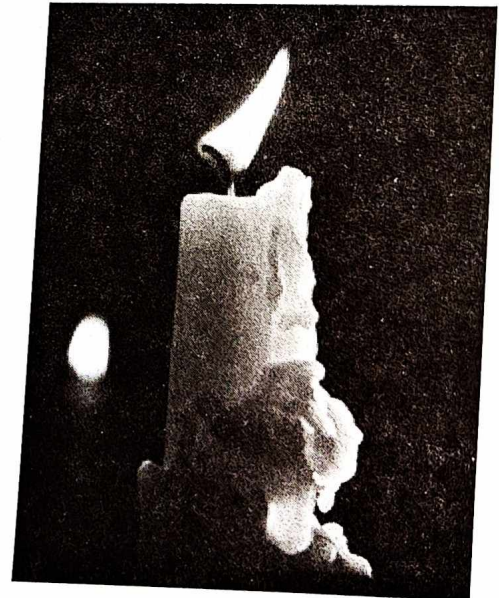
एक दिन तो यही दुनिया,
प्रेम का बाजार जो थी।
मोह, ईर्ष्या को जलाकर,
बन रही अलकापुरी थी।

आज वही बन गई है,
दानवों का राज्य ही तो।
जिसके चंगुल में ही पड़कर,
व्यग्र होते विज्ञ ही तो।

इसलिए प्रभु से कहूँगा,
मैं न अब इस भू पर रहूँगा।

ईश! जल्दी लोक बदलो,
ईश! जल्दी शोक जालो।
और जालो मोह को तुम,
कपट-छल व्यभिचार को तुम।

नहीं तो, तुमसे कहूँगा,
मैं न अब इस भू पर रहूँगा।





बनवारी सिंह
लेखाकार-सह-केयरटेकर

पानी के लिए किसान और
कांवरिया- इंद्र भगवान से प्रार्थना

कहवाँ भुलाई बानी इंद्र देव, पानी बिना परल बा आकाल,
रोवत बा किसनवां के मईया नयनवां से बहता ढरढर लोर,
कवन भईल बा हमनी से गलती बिनती करीला करजोड़।

कहवाँ भुलाई बानी इंद्र देव पानी बिना परल बा आकाल,
राते दिन गरमी के चलते आवत जात बा परान,
दया तनी करू हे प्रभुजी बचालीं किसनवां के जान।

कहवाँ भुलाई बानी इंद्र देव पानी बिना परल बा आकाल,
आ गईल बा सावन के महिनवां, कांवरियाँ भईल बा तैयार,
कईसे राह कटी हमनी के हो जा न तू भोला सहाय।

कहवाँ भुलाई बानी इंद्र देव पानी बिना परल बा आकाल,
गनवां बनावे बनवारी टिकैत पुर मकान,
प्रेमवां से बोला हो किसनवां श्री सीता-राम।

कहवाँ भुलाई बानी इंद्र देव पानी बिना परल बा आकाल।

जय जवान, जय किसान
जय हिन्द





बनवारी सिंह
लेखाकार-सह-केयरटेकर

सावन के गीत

बड़ा परेशान करेला बाबा तोर डगरिया,
कांवरिया ले के पहिले गईली ना,
पहिला विनती भईल बाबा से,
जलवा तनी चढ़ावे दा।
जलवा चढ़ते मोर पैरवा पिछल गईल,
हो गईली हैरान बड़ा परेशान करेला बाबा
तोर डगरिया, कांवरिया ले के पहिले गईली ना।
दूसरा विनती भईल बाबा से दर्शन तनी दिखावा ना,
दर्शन दिखत मोर अँखियाँ बिहस गईल,
हो गईली हैरान, बड़ा परेशान करेला बाबा तोर डगरिया,
कांवरिया ले के पहिले गईली ना।
तीसरा विनती करे बनवारी बाबा के जाना जरूरी दुआरी,
जो जाई बाबा के दुआरी हो जाई मालामाल,
बड़ा परेशान करेला बाबा तोर डगरिया,
कांवरिया ले के पहिले गईली ना।

बोल कांवरिया बोलबम-बम बोल-बम बोल



ओ मेस्सरे सनम, तुझको मेरी कसम,
एक झलक अपनी मुझको दिखा जा।
आजा, आजा, सनम, अब तू आजा। 11।

ऐसा रंगे महल, कोई चहल न पहल,
खुल गया दस का दस दरवाजा।
आजा, आजा, सनम, अब तू आजा। 12।

कोई शासन नहीं, है सिंहासन नहीं,
फिर भी रानी मैं, तू मेरा राजा।
आजा, आजा, सनम, अब तू आजा। 13।

प्यार करले मुझे, प्यार कर लूं तुझे,
बीच की दूरियां सब मिटा जा।
आजा, आजा, सनम, अब तू आजा। 14।

एक सपना मेरा, तुझको देखूं जरा,
मेरी आँखों से आंखें मिला जा।
आजा, आजा, सनम, अब तू आजा। 15।

बिलखती रही, आंखें तकती रही,
आकर पलकें, तू मेरी गिरा जा।
आजा, आजा, सनम, अब तू आजा। 16।

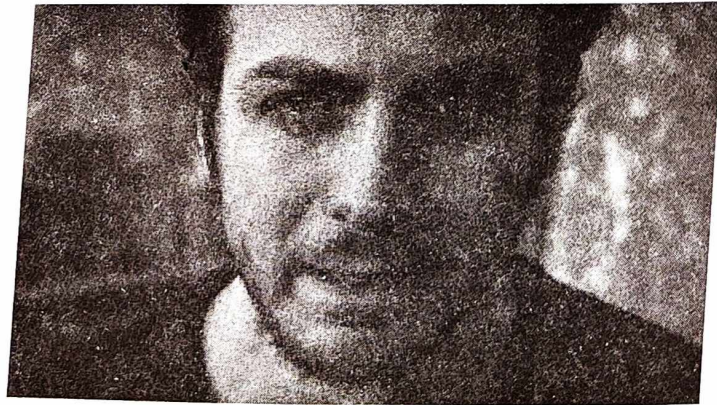
लाल जोड़ा कभी, मैंने पहनी नहीं,
जोड़ा चुनरी तू मुझको ओढ़ा जा।
आजा, आजा, सनम, अब तू आजा। 17।

रथ, हाथी, घोड़े, खुद मैंने छोड़े,
अब बांस का एक वाहन दिला जा।
आजा, आजा, सनम, अब तू आजा। 18।

कली लट में नहीं, न सजावट कहीं,
फूल अर्थी पर मेरी बिछा जा।
आजा, आजा, सनम, अब तू आजा। 19।

चलता शीतल पवन, कंपकंपाता बदन,
अग्नि-वेदी पर मुझको सुला जा।
आजा, आजा, सनम, अब तू आजा। 110।

रही तुझपे फिदा, करदे मुझको विदा,
हाथ से घिसकर मेंहदी मिटा जा।
आजा, आजा, सनम, अब तू आजा। 111।





हिन्दी पखवाड़ा समारोह-2017 के उद्घाटन के सुअवसर पर माननीय महालेखाकार (लेखा परीक्षा) एवं अधिकारीगण दीप प्रज्वलित करते हुए।



माननीय वरीय उप महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) हिन्दी पखवाड़ा समारोह 2017 के उद्घाटन के अवसर पर स्वागत भाषण देती हुई।



हिन्दी दिवस -2017 के सुअवसर पर उप महालेखाकार (लेखा, वी. एल. सी. एवं कार्य) माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार के संदेश का वाचन करते हुए।



हिन्दी दिवस -2017 के अवसर पर माननीय वरीय उप महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) अन्य अधिकारियों के साथ कार्यालय-पत्रिका “चेतना” का विमोचन करती हुई।



हिन्दी दिवस -2017 के सुअवसर पर माननीय वरीय उप महालेखाकार कार्यालय परिवार की बच्ची को पुरस्कार प्रदान करती हुई।



हिन्दी दिवस-2017 के सुभअवसर पर कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारीगण।



स्वतंत्रता दिवस 2018 के अवसर पर माननीय महालेखाकार एवं वरीय उप महालेखाकार कार्यक्रम का आनंद लेते हुए।



हिन्दी पखवाड़ा समारोह-2017 के अवसर पर महालेखाकार (लेखा परीक्षा), वरीय उप महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) ध्यानस्थ मुद्रा में।



पृथ्वी पर कई प्रकार के जीव जन्तु रहते हैं। मनुष्य भी उनमें से एक है। मनुष्य अपने जीवन को सुखमय बनाना चाहता है और सुखमय बनाने की इच्छा के कारण वह हमेशा प्रयत्नशील रहता है। प्रयत्न भी कई प्रकार के होते हैं। कुछ प्रयत्न; प्रयत्नकर्ता और देश, राज्य, समाज सभी के लिए सही होते हैं तो कुछ बस प्रयत्नकर्ता के लिए सही होते हैं, देश समाज के लिए नहीं। प्रयत्न का देश और समाज के लिए सही नहीं होने का आधार - वैधानिक मान्यताएँ और परम्पराएँ इत्यादि हो सकती हैं। देश की समृद्धि एवं मानव के सुखमय जीवन के लिए अधिकाधिक सही प्रयत्नों की अपेक्षा की जाती है। सही प्रयत्न के अंतर्गत आविष्कार एवं खोज भी शामिल हैं। सही एवं गलत दोनों प्रयत्नों के कारण पृथ्वी पर परिवर्तन होता है और उक्त परिवर्तन अन्य परिवर्तनों का कारण बनता है। यही क्रम सतत चलता रहता है।

दिन के बाद रात और रात के बाद पुनः दिन होना, दिन और रात का छोटा-बड़ा होने का कुछ भौगोलिक कारण होता है और फिर उसका परिणाम। परिणामस्वरूप जो परिवर्तन

होता है, उससे नई समस्याएँ मनुष्य के सम्मुख उत्पन्न होती हैं। समस्या से मनुष्य के जीवन में रुकावट, अड़चन इत्यादि आती है, जिससे उसकी सुविधा में कमी एवं कष्ट में वृद्धि होती है। सुविधा में कमी को दूर करने के लिए पुनः मानवीय प्रयत्न करना पड़ता है, जिससे पूर्व की असुविधा में कुछ कमी तो आती है, परंतु कुछ नई समस्या आ खड़ी होती है। इसे कुछ उदाहरणों से स्पष्ट किया जा सकता है। गाँव में शहरों जैसा सड़क का न होना ग्रामीणों के लिए एक महत्वपूर्ण समस्या है। सड़क के अभाव में गाँव से बाहर कहीं जाने में, कृषि उत्पादों को बेचने के लिए बाज़ार तक ले जाने में काफी परेशानियों को झेलना पड़ता है। लगता है सड़क बन जाएगी तो ग्रामीणों का जीवन खुशहाल हो जाएगा। सरकारी प्रयास से सड़कें बनना प्रारम्भ होती हैं तो जमीन के अधिग्रहण के फलस्वरूप कुछ लोग भूमिहीन हो जाते हैं। सरकार जमीन का मुआवज़ा तो देती है, पर सरकारी प्रक्रिया पूरी होने एवं भुगतान होने में काफी समय लगता है। जिससे भुगतान पाने वाले ग्रामीणों को काफी परेशानी होती है। जो लोग संयोग से भूमिहीन हो जाते हैं, उनके लिए गाँव में बनी सड़क

किसी काम की नहीं रह जाती है। सड़क बन जाने पर सभी प्रकार के वाहनों का परिचालन शुरू हो जाता है तथा गाँव शहर से जुड़ जाता है। कृषकों का उत्पाद शहरों तक आसानी से पहुँचने लगता है, जिससे कृषकों की आय बढ़ने लगती है। परंतु दूसरी ओर गाँव की शांति में कमी आने लगती है। गाड़ियों के आने तथा जाने पर शोरगुल तथा सड़क पर दुर्घटना में वृद्धि होने लगती है। दुर्घटनाओं को कम करने के लिए स्पीड ब्रेकर बनाकर ग्रामीण अपने तथा बच्चों को सुरक्षित करने का प्रयास करते हैं। फलतः वाहन चालक उक्त स्पीड ब्रेकर के कारण दुर्घटनाग्रस्त होते रहते हैं। इस प्रकार स्वतः स्पष्ट है कि किसी समस्या का पूर्णतः समाधान नहीं किया जा सकता है।

भारत कृषि प्रधान देश रहा है। यहाँ की जनसंख्या अनियंत्रित गति से बढ़ती जा रही है। बढ़ती जनसंख्या को खिलाने के लिए कृषि उत्पादन को बढ़ाने का प्रयास जारी है। उत्पादन में वृद्धि के लिए कृषि कार्य में यंत्रों का उपयोग बढ़ाया जा रहा है। प्रारम्भ में यंत्रीकरण से सिर्फ लाभ नजर आता है, परंतु बाद में कुछ हानियाँ भी नजर आने लगती हैं। खेत की जुताई जानवर के बदले ट्रैक्टर द्वारा किया जाने लगा है तथा फसलों की कटाई एवं दौनी का कार्य मशीन से होने लगा है। इस परिवर्तन से श्रम की बचत लाभ के रूप से दिख रहा है, परंतु इससे नई समस्या उत्पन्न

हो गई है। अब पशु पालन कमजोर पड़ता जा रहा है, खेत में गोबर से बने खाद की कमी होती जा रही है और गोबर खाद की कमी के कारण रासायनिक खाद का ज्यादा उपयोग हो रहा है, जिससे खेत की उर्वरक क्षमता नष्ट होती जा रही है। इस प्रकार एक परिवर्तन अन्य परिवर्तनों का कारण बनता जा रहा है। इससे केवल लाभ ही नहीं, अपितु हानि भी हो रही है।

आज से दो-तीन दशक पूर्व तक मनोरंजन के लिए अधिकांश लोग फिल्म देखने सिनेमाघरों में जाते थे। फिल्म के लिए टिकट बहुत आसानी से नहीं मिल पाता था। कभी-कभी सिनेमाघरों से वगैर सिनेमा देखे लोगों को अपने घर वापस लौटना पड़ता था। बाद में टी.वी. का प्रचलन बढ़ने पर लोग घर में ही फिल्म देखने लगे। टी.वी. पर फिल्म के प्रसारण से लोग बहुत ही खुश रहने लगे, क्योंकि सिनेमाघरों के चक्कर लगाने से छुटकारा मिला था। इस परिवर्तन से सारा मानव समाज काफी खुश था। परंतु टी.वी. की सुविधा ने अन्य समस्याओं को जन्म दिया। सभी घर छोटे सिनेमाघर में तब्दील हो गए। टी.वी. पर फिल्म के अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के सिरियल एवं अन्य कार्यक्रमों का प्रसारण एवं प्रदर्शन होने लगा, जिससे हर उम्र का व्यक्ति अपना समय टी.वी. देखने में देने लगा। दुष्परिणाम के रूप में बच्चे अपना

अधिकांश समय कार्टून देखने में गंवाने लगे। फलतः समय से पहले आँखों पर चश्मा चढ़ गया तथा उम्र से पहले युवा हो गए। घर भर में टी.वी. चलते रहने के कारण आवासीय कॉलोनी में काफी शोर होने लगा। इस शोर से मानव मस्तिष्क तनावग्रस्त होने लगा है। किसी फिल्म या समाचार के प्रदर्शन के पहले लंबे समय तक वस्तु एवं सेवाओं से संबंधित प्रचार अश्लील तस्वीरों के साथ दिखाए जाते हैं। इन प्रचारों से दर्शकों का समय बर्बाद तो होता ही है, साथ ही देश की बिजली भी बर्बाद होती है। जो फिल्म दो घंटे में दिखाई जा सकती है, उसे देखने में तीन-चार घंटे का समय लग जाता है। प्रचार पर खर्च करने वाली कंपनियों को यह मालूम नहीं है कि सिर्फ अच्छे ढंग से एवं लंबे समय तक प्रचार करवाने से बिक्री नहीं बढ़ेगी। जबतक उपभोक्ताओं की क्रय शक्ति नहीं बढ़ेगी, तबतक बिक्री नहीं होगी। सरकार को भी इस बात को समझना चाहिए तथा प्रचार पर नियंत्रण रखना चाहिए। वस्तु एवं सेवा की गुणवत्ता को काफी बढ़ा-चढ़ा कर प्रचारित किया जाता है, जो काफी घातक होता है। वस्तुओं के प्रचार में अनावश्यक रूप से लड़कियों/महिलाओं की तस्वीर दिखने से युवा मन-मस्तिष्क पर बुरा असर पड़ रहा है, जिससे समाज विषाक्त होता जा रहा है। इस प्रकार एक परिवर्तन करने या होने पर अन्य बहुत सारे परिवर्तन स्वतः होने का क्रम आगे

जारी रहता है।

मनुष्य जीत को पसंद करता है तथा हार को नापसंद करता है। जीतने के लिए मनुष्य को काफी प्रयास, परिश्रम एवं संघर्ष करना पड़ता है। क्षेत्र एवं विषय चाहे कुछ भी हो, व्यक्ति सभी प्रतिस्पर्धाओं में आगे निकलना चाहता है और आगे निकलने के लिए काफी मेहनत करता है। उदाहरणार्थ:- दौड़ की स्पर्धा चल रही है। दौड़ में शामिल सभी धावक यथाशक्ति तेज दौड़ते हैं तथा उसमें से कोई एक प्रथम स्थान प्राप्त करता है। अर्थात् जीत प्राप्त करता है। जीतने वाला काफी खुश होता है, क्योंकि उसे काफी सम्मान एवं पुरस्कार दिए जाते हैं। परंतु अपवादस्वरूप हारने पर भी मानव खुश होता है, अगर वह हार अपने संतान से मिली हो। मसलन कोई व्यक्ति भारतीय प्रशासनिक सेवा की परीक्षा में सफल नहीं हो सका परंतु कालांतर में उसकी संतान उक्त परीक्षा में शामिल होकर सफल होती है, तो वह व्यक्ति अपने पुत्र की सफलता को अपनी सफलता समझता है और काफी खुश होता है। परंतु यह खुशी आगे चलकर कमजोर होने लगती है। मनुष्य धीरे-धीरे बुढ़ापे की ओर अग्रसर होता जाता है और उधर उसकी संतान अपने पद संबंधी कर्तव्य निर्वाह में तथा अपनी पत्नी, बाल-बच्चे की देखरेख में इस प्रकार घिरता चला जाता है कि बूढ़े माता-पिता की देख-भाल समुचित ढंग से

नहीं कर पाता है। बूढ़े माता-पिता अपने सफल बेटे की ओर से सेवा-सुश्रुसा में कमी देखकर पश्चाताप का सहारा लेते हैं। पश्चाताप यह देख कर होता है कि जिस व्यक्ति की संतान पढ़ाई करने एवं सरकारी सेवा प्राप्त करने में असफल होकर अपने माता-पिता के साथ रहकर, कोई अपना व्यवसाय चलाकर जीवन यापन कर रही हो, उसकी देख-रेख उनकी अपेक्षा अच्छे ढंग से हो रही है। बुढ़ापे में शरीर कमजोर हो जाता है। फलतः दूसरों की सेवा लेना अनिवार्य हो जाता है। जिस व्यक्ति की संतान जितने बड़े पद पर आसीन होती है, वह अपने गाँव एवं माता-पिता से उतना ही दूर चला जाता है। फलतः बूढ़े माता-पिता की सेवा प्रत्यक्ष रूप से कर पाना संभव नहीं हो पाता है। नौकर, दाई इत्यादि की सेवा के सहारे उन बुजुर्गों को अपना जीवन व्यतीत करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में मन में विचार आता है कि शैक्षिक रूप से विकास करना भले ही अपने समय में सुखकारी था। परंतु उसी सुख की अनुभूति के कारण बुढ़ापे में अपने बाल-बच्चों से दूर रहने की स्थिति में या/और साथ रहने

पर भी सेवा में कमी के कारण अपेक्षाकृत अधिक दुख की अनुभूति होती है। इन बुजुर्गों की मृत्यु के बाद उनके पुत्रों द्वारा पैतृक संपत्ति बेच दी जाती है, तथा बड़े शहरों में या विदेशों में जाकर आशियाना बन जाता है। पैतृक निवास स्थान से अन्यत्र आशियाना बनाना विकास एवं समृद्धि के द्योतक के रूप में प्रचलित हो चुका है। पर ऐसे विकास करने वालों को यह महसूस नहीं होता है कि कहीं से उनका विनाश हो गया है। ऐसे विकास करने वालों को यह भी अंदाजा नहीं होता है कि उनके आशियाने का भी वही हश्र होगा जो उनके बुजुर्गों के आशियाने का हुआ है। ये सभी, परिवर्तन दर परिवर्तन का उदाहरण है।

परिवर्तन समय कि धारा के साथ बहते जाता है। परिवर्तन बदलते समय में रूप, आकार, विचार, व्यवहार, फैशन, सोच, प्रदर्शन इत्यादि सभी को बदल देता है। इसे कोई रोक नहीं सकता है। बुजुर्गों को परिवर्तन असहज लगता है जबकि युवा पीढ़ी को वह सही लगता है।



इंसान परिस्थिति का दास होता है तथा देश, काल, परिस्थिति एवं सामर्थ्य के अनुसार लिया गया निर्णय उसके ज्ञान से सही होता है, जो समय के साथ अनुकूल नहीं भी रह सकता है। अतएव समर्पित कर्तव्यनिष्ठ के रूप में राग-रहित, विवेकपूर्ण तथा नियमानुकूल निर्णय अपेक्षित है, जो जीवन को आत्मबल देता है। हरेक इंसान तथापि गलतियाँ कर सकता है। अतएव यहाँ स्पष्ट करना है कि किसी बदले परिदृश्य में किसी इंसान के रूप में मेरे द्वारा व्यावहारिक किसी अंजाने भूल के लिए मैं क्षमा प्रार्थी हूँ।

देश-काल तथा परिस्थिति की मांग के अनुरूप ईश्वर की अनुकंपा से एवं अपने पुरुषार्थ के अनुसार मनुष्य अपने जीवन धारा को मूर्तरूप देता है, क्योंकि परिस्थिति एवं पुरुषार्थ का प्रतिफल ही जीवन है, अन्यथा यह जीवन सुगम-सरल नहीं रहेगा। पुरुषार्थ का पर्याय है धैर्य के साथ सतत कार्यशीलता एवं आशावाद। मुझे भी शायद मेरे आवश्यकता के अनुरूप ईश्वर के द्वारा भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक के कार्यालय के अधीन महालेखाकार, बिहार, पटना के कार्यालय में लेखापरीक्षक के रूप में कार्य प्रारम्भ करने का

गौरवपूर्ण सुअवसर मिला।

हमारे कार्यालय का भारत के संविधान में विशेष कर्तव्य है। लेकिन भारत के संविधान में दिये गए दायित्वों में हमारा कर्तव्य, समय, काल तथा आधुनिक तकनीकी के अनुरूप में बढ़ता गया है। सूचना का अधिकार, सिटीजन चार्टर, सोशल ऑडिट, तथा आई टी सैक्टर में भी हमारे उत्तरदायित्व में वृद्धि हुई है। यह हमारे कार्यकलापों को कुछ हद तक पारदर्शी करने की दिशा में एक प्रयास है। अतएव हमें भी इस कार्यालय के कार्यों से संबन्धित दायित्वों को सजगतापूर्वक पूर्ण क्षमता से हर संभव स्तर पर पूर्ण करते रहना पड़ता है। नए आयाम के कार्यों तथा पारदर्शिता को पूर्णतया सफल करने के लिए अपने सामर्थ्य को और भी बढ़ाते रहना चाहिए, जिससे कार्य करने में कठिनाई उत्पन्न न हो तथा कार्य आत्मसंतोषप्रद हो। यह कार्यालय बिहार सरकार के विभिन्न विभाग/निकाय के लेखा एवं हकदारी से संबन्धित दावों का निष्पादन करता है। यह महत्वपूर्ण है कि लेखा संधारण में खर्च का मिलान, साथ ही साथ खर्च की राशि तथा उसकी उपयोगिता का तालमेल होना आवश्यक है। संभवतः खर्च की आँ

इंसान परिस्थिति का दास होता है तथा देश, काल, परिस्थिति एवं सामर्थ्य के अनुसार लिया गया निर्णय उसके ज्ञान से सही होता है, जो समय के साथ अनुकूल नहीं भी रह सकता है। अतएव समर्पित कर्तव्यनिष्ठ के रूप में राग-रहित, विवेकपूर्ण तथा नियमानुकूल निर्णय अपेक्षित है, जो जीवन को आत्मबल देता है। हरेक इंसान तथापि गलतियाँ कर सकता है। अतएव यहाँ स्पष्ट करना है कि किसी बदले परिदृश्य में किसी इंसान के रूप में मेरे द्वारा व्यावहारिक किसी अंजाने भूल के लिए मैं क्षमा प्रार्थी हूँ।

देश-काल तथा परिस्थिति की मांग के अनुरूप ईश्वर की अनुकंपा से एवं अपने पुरुषार्थ के अनुसार मनुष्य अपने जीवन धारा को मूर्तरूप देता है, क्योंकि परिस्थिति एवं पुरुषार्थ का प्रतिफल ही जीवन है, अन्यथा यह जीवन सुगम-सरल नहीं रहेगा। पुरुषार्थ का पर्याय है धैर्य के साथ सतत कार्यशीलता एवं आशावाद। मुझे भी शायद मेरे आवश्यकता के अनुरूप ईश्वर के द्वारा भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक के कार्यालय के अधीन महालेखाकार, बिहार, पटना के कार्यालय में लेखापरीक्षक के रूप में कार्य प्रारम्भ करने का

गौरवपूर्ण सुअवसर मिला।

हमारे कार्यालय का भारत के संविधान में विशेष कर्तव्य है। लेकिन भारत के संविधान में दिये गए दायित्वों में हमारा कर्तव्य, समय, काल तथा आधुनिक तकनीकी के अनुरूप में बढ़ता गया है। सूचना का अधिकार, सिटीजन चार्टर, सोशल ऑडिट, तथा आई टी सैक्टर में भी हमारे उत्तरदायित्व में वृद्धि हुई है। यह हमारे कार्यकलापों को कुछ हद तक पारदर्शी करने की दिशा में एक प्रयास है। अतएव हमें भी इस कार्यालय के कार्यों से संबन्धित दायित्वों को सजगतापूर्वक पूर्ण क्षमता से हर संभव स्तर पर पूर्ण करते रहना पड़ता है। नए आयाम के कार्यों तथा पारदर्शिता को पूर्णतया सफल करने के लिए अपने सामर्थ्य को और भी बढ़ाते रहना चाहिए, जिससे कार्य करने में कठिनाई उत्पन्न न हो तथा कार्य आत्मसंतोषप्रद हो। यह कार्यालय बिहार सरकार के विभिन्न विभाग/निकाय के लेखा एवं हकदारी से संबन्धित दावों का निष्पादन करता है। यह महत्वपूर्ण है कि लेखा संधारण में खर्च का मिलान, साथ ही साथ खर्च की राशि तथा उसकी उपयोगिता का तालमेल होना आवश्यक है। संभवतः खर्च की ऑन

लाइन एकाउंटिंग सिस्टम के लागू होने के बाद वित्तीय लेखा की रूप-रेखा में किसी प्रकार के नवप्रवर्तन पर विचार हो सकता है।

हमारे मुख्यालय कार्यालय द्वारा आचार संहिता पर वर्ष २०१३ में पुस्तिका/अनुदेश परिचालित हुई है। इसके अनुदेश कार्यालय के बाहर तथा आंतरिक कार्यकलाप में लागू हैं। उल्लेख करना है कि कार्य निष्पादन के क्रम में नियमों के अनुपालन के मापदंड की परिधि के साथ-साथ सामाजिक नैतिक उत्तदायित्व का आदर्श होना चाहिए, क्योंकि “जहां नियम समाप्त होते हैं वहाँ नैतिकता शुरू होती है”।

जिस प्रकार हर बागवानी में कई प्रकार के फूलों में कुछ ऐसे फूल भी होते हैं जो हमें सुगंधित करते हैं और सकारात्मक सुगंध

का फैलाव पूरे वातावरण में होता है, उसी प्रकार हमारे कार्यालय के महालेखाकार, वरीय उप महालेखाकार, उप महालेखाकार, वरीय लेखा अधिकारी तथा लेखा अधिकारी तथा अन्य सहकर्मी के उच्च सकारात्मक आदर्शों की कार्यशैली ने मुझे और अधिक मेहनत करने के लिए प्रेरित किया है, जिसके लिए उन्हें मेरा कोटि-कोटि धन्यवाद। मुझे दिये गए संस्कारों के लिए मैं अपने स्व० माता-पिता को चरण नमन करता हूँ। मेरे परिवार तथा पत्नी द्वारा हमारे कार्यालय के सुचारु रूप से कार्य सम्पादन में जो सहयोग मिला उसके लिए उन्हें धन्यवाद।





धीरज कुमार
लेखाकार

संगीत चिकित्सा से तनाव का प्रबंधन

तनाव इस युग की महव्याधि के रूप में उभरकर हम सब के सामने है। जिसका प्रमाण यह है कि लगभग ७४ प्रतिशत आबादी आधि (मानसिक रोग) और व्याधि (शारीरिक रोग) से तनावग्रस्त हैं। तनाव का हमारे जीवन से गहरा रिश्ता भी है। यह सत्य है कि जीवन के हर मोड़ पर तनाव आते हैं पर उससे भी ज्यादा सच यह है कि हर तनाव कुछ न कुछ नया करने की प्रेरणा देकर जाता है। मनःस्थिति तथा परिस्थिति के बीच असंतुलन के कारण तनाव उत्पन्न होता है।

तनाव प्रबंधन करने के लिए शरीर व मन के विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा कई तरह की दवाएं, वैज्ञानिक प्रविधियाँ, योग एवं वैकल्पिक चिकित्सा जैसे - संगीत चिकित्सा, प्राण चिकित्सा, रंग चिकित्सा आदि तकनीकों का ईजाद किया गया है। वर्तमान समय में मनोचिकित्सा के एक अंग के रूप में विदेशों में

तथा भारत में संगीत चिकित्सा का उपयोग किया जा रहा है। संगीत मानव मन में स्थित विभिन्न मनोभावों की अभिव्यक्ति है, संगीत का उद्देश्य न केवल मानव व्यवहार को स्वर तथा ताल के माध्यम से अभिव्यक्त करना है, बल्कि व्यक्ति को तनाव से मुक्त करके संतुलित व्यवहार की ओर भी प्रेरित करना है।

संगीत में रोगी के संवेगात्मक एवं बौद्धिक पहलुओं को जागृत करने की शक्ति होती है। इसे सुनते ही रोगी की मनःस्थिति परिवर्तित हो जाती है। मनःस्थिति में परिवर्तन होने पर एक व्यक्ति का अपनी परिस्थितियों को देखने, समझने, व उसका विश्लेषण करने का दृष्टिकोण भी बदल जाता है, जिससे तनाव प्रबंधन में मदद मिलती है। अतः संगीत का मन पर पड़ने वाले चिकित्सीय प्रभाव को नजर अंदाज़ नहीं किया जा सकता है।





चंदन कुमार
लेखाकार

हम अकेले में क्यों गुम हैं ?

इस जहां में बहुत सारे युग्म हैं।
फिर भी हम अकेले में क्यों गुम हैं?

कभी खुशी की लहर तो कभी दुख का कहर है।
यहाँ दिल्लगी मत करो यारों, ये अजनबियों का शहर है।
इस शहर में लोगों की भीड़ बहुत है।
पर जो नहीं है, शायद वो तुम हो।
इस जहाँ में बहुत सारे युग्म हैं।
फिर भी हम अकेले में क्यों गुम हैं?

सब को रंगबिरंगे प्यारे मनमोहक से दिखते हैं ये सुमन।
लेकिन काँटों से चलनी हुआ नहीं दिखता मेरा अन्तर्मन।
भँवरे भी आते हैं, इन पुष्पों के रसपान को।
पर जो नहीं आया शायद वो तुम हो।
इस जहाँ में बहुत सारे युग्म हैं।
फिर भी हम अकेले में क्यों गुम हैं?

कभी तुम्हारा मुझपे प्यार था, तो कभी इनकार।
शायद तुझमें ही हमने देखा है अपना संसार।
ये संसार भी बसने से पहले उजड़ रहा क्योंकि,
जो नहीं है शायद वो तुम हो।
इस जहाँ में बहुत सारे युग्म हैं।
फिर भी हम अकेले में क्यों गुम हैं?

कभी यूँ मिलन हुआ था हमारा जैसे बिछड़ना ही नहीं।
फिर भी बातें इतनी सारी क्यूँ रह गई अनकही?
बात करने को इस जहाँ में बहुतों की भीड़ है।
पर जो नहीं है, शायद वो तुम हो।
इस जहाँ में बहुत सारे युग्म हैं।
फिर भी हम अकेले में क्यूँ गुम हैं?

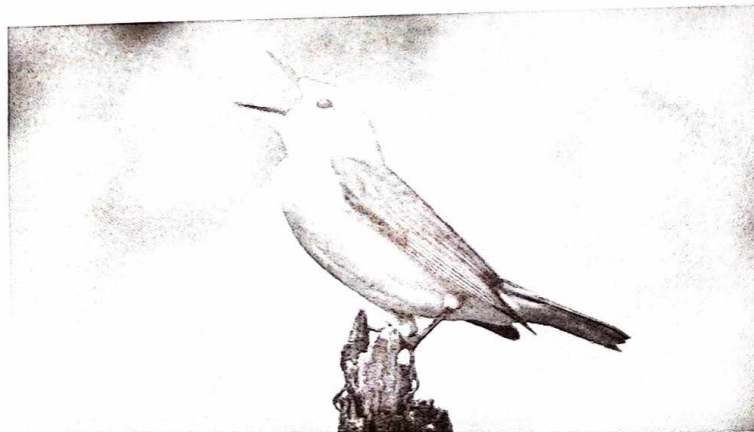




चंदन कुमार
लेखाकार

प्यास के मारे

प्यास की मार उनसे पूछो
पास जिनके कुआं तो हो, पानी नहीं,
पास दिलके, लेकिन संग आनी नहीं।
याद जिनके दिल से जानी नहीं।
बात जिनके, सिर्फ कहानी नहीं।
राज ऐसे कि छुपा ले पर दिखानी नहीं।
दर्द गहरे दिल के पर बतानी नहीं।
वो महबूब हैं, किसी और की रानी नहीं।
प्यार तो है, पर उसने हमें बतानी नहीं।
इतनी मोहब्बत है कि बिन तेरे दीवानी नहीं।





चंदन कुमार
लेखाकार

जब तक तेरी याद और तू रहेगी

फिकर भी रहेगी, ज़िकर भी रहेगी।
तनहाई भी रहेगी, अंगड़ाई भी रहेगी।
इश्क़ में मेरे, अशक़ भी रहेगा।
खयाल भी तेरा है, सवाल भी रहेगा।
अरमानों की महफिल में, मुस्कान भी रहेगी।
तेरा शबाब भी है, जवाब भी रहेगा।
आखों की कजरी, मौसम की बदरी।
ये हवा, ये फिजा, कुछ कहती है।
सावन की बहार में, नैनो की बौछार में।
सबकुछ तो है, और सबकुछ रहेगी।
पर शायद, क्यूँ क्यूँ क्यूँ, तू नहीं रहेगी।
एक जगह दिल में तबतक रहेगी।
जब तक तेरी याद और तू रहेगी।
जब तक तेरी याद और तू रहेगी।
जब तक तेरी याद और तू रहेगी।
और ये तो हमेशा रहेगी, हमेशा रहेगी।





अंजनी कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

ट्रेन खुली कि नहीं?

बात सन् २००० के १४ मई की है। मैं जी.डी. अनुभाग में वरीय लेखाकार के पद पर कार्यरत था। तत्कालीन स.ले.अ. श्री अजीत कुमार सिन्हा अवकाश पर थे, क्योंकि बुद्ध मार्ग स्थित पुष्पांजलि इंकलेव में उनके फ्लैट का गृह प्रवेश दिनांक १५ मई २००० को होना तय था। जी.डी. अनुभाग का कार्य मैं ही देख रहा था। श्री पी.के. तिवारी, व.उप महलेखाकार उस समय प्रशासन स्कन्ध के प्रभार में थे। डी.ए.जी. साहब के कक्ष में कार्यवश प्रतिदिन तीन-चार बार जाया करता था। साहब मुझे कार्यवश बहुत अच्छे कर्मों के रूप में जानते थे। चूँकि जी.डी. के प्रभार में मैं ही था। अतः डी.ए.जी. साहब मुझे दिनांक १४ मई को अपने कक्ष में बुलाये और एक निजी कार्य करने का आदेश दिये। निजी कार्य यह था कि उनके एक ग्रामीण को मुगलसराय के लिए ट्रेन पर चढ़ाना था। मैंने नम्रतापूर्वक उनका आदेश स्वीकार कर लिया। ट्रेन ७ बजे संध्या में थी। साहब के पास एक पुरानी एम्बेस्डर कार थी और मेरे पास क्लैसिक स्कूटर। चूँकि मुझे उनका आवास पता नहीं था। अतः उन्होंने कार्यालय अवकाश, ६ बजे के बाद साथ चलने के लिये कहे। ठीक ६ बजे वे अपने कक्ष से

निकलकर जी.डी. अनुभाग में स्वयं आए और चलने के लिए कहें। मैं भी शीघ्र अनुभाग से मोटरसाइकल स्टैंड के लिए निकला। मुझे साहब के कार को फॉलो करना था। साहब अपना कार स्टार्ट कर आगे बढ़े, लेकिन मेरा स्कूटर स्टार्ट नहीं हो सका। फलतः साहब रोड पार कर रुक गए और पीछे मुड़कर मुझे देखा। जैसे ही उन्होंने मुझे देखा मेरा स्कूटर स्टार्ट हो गया, मैं उनके कार के नजदीक गया। उन्होंने मुझसे पूछा "क्या हुआ अंजनी"? मैंने कहा- कुछ नहीं सर। थोड़ी स्टार्टिंग समस्या थी। उन्होंने कहा- अब ठीक है न? चलूँ? मैंने कहा, यस सर। साहब गाड़ी से आगे बढ़े और मैं स्कूटर से उनकी गाड़ी को फॉलो करने लगा। पर यह क्या- दारोगा राय पथ, सरपेंटाइन रोड स्थित पंचमंदिर पहुँचते ही मेरा स्कूटर पुनः बंद हो गया और साहब मेरे सामने नजरों से ओझल हो गए। मैं तेजी से स्कूटर को किक लगाने लगा। लगभग २० किक लगाने के बाद भी स्कूटर स्टार्ट नहीं हुआ। किक मारने से मेरा दम भी फूलने लगा था। क्या करूँ क्या न करूँ, क्योंकि साहब तो आखों से ओझल हो गए थे। मैंने अपना स्कूटर मोड़ा और पैदल ही स्कूटर को दौड़ता हुआ वापस ऑफिस कैम्पस

पहुँचा। वहाँ पर वरीय लेखा अधिकारी श्री अच्युता नन्द सिंह एवं वर्तमान में कल्याण अनुभाग सहायक श्री अरुण पाठक एवं अन्य लोग खड़े थे। लोगों ने पूछा कि क्या हुआ? मैंने कहा, पता नहीं स्कूटर को क्या हो गया है। बार-बार बंद हो जा रही है। श्री अरुण पाठक ने मेरी गाड़ी का पेट्रोल टैंक चेक किया और कहा कि गाड़ी में तो पेट्रोल है ही नहीं। तभी श्री पाठक ने सी.पी.डबल्यू.डी. के ठेकेदार श्री अखिलेश सिंह से उनका स्कूटर मंगवाकर मुझे दिया। मैंने उनका स्कूटर लिया और शीघ्रता से चल पड़ा। जैसे ही मैं पुनः दारोगा राय पथ स्थित पंचमंदिर पहुँचा तो लगा जैसे मंदिर में स्थित देवी-देवता कह रहे हों- मूर्ख! तू तेजी से कहाँ जा रहा है? तुम्हें साहब का घर पता है? ऐसा एहसास होते ही मैं पुनः वापस ऑफिस पहुँचा। श्री अच्युता नन्द सिंह, वरीय लेखा अधिकारी एवं अन्य लोग अभी तक गार्ड रूम के पास ही खड़े थे। देखते ही कहा- पुनः वापस आ गए। अब तू बचेगा नहीं, तेरा सस्पेंशन तो तय है। तब श्री पाठक ने पुनः मेरी मदद की। एक कार्यालय कर्मि जो पास में ही खड़ा था, साहब का आवास जानता था। श्री पाठक ने उसे मेरे साथ जाने को कहा। मैंने उसे स्कूटर पर बैठाया और सरपट साहब के आवास पर पहुँचा एवं अपने पहुँचने की सूचना अंदर दी। बड़े साहब तेजी से बाहर आए और मुझे ट्रेन भाड़ा दिये और साथ ही उस ग्रामीण को जल्द

लेकर पटना जंक्शन प्रस्थान करने को कहा। मैं सरपट स्टेशन को चल पड़ा। टिकट लेने के उपरांत प्लेटफॉर्म संख्या-२ पर पहुँचा। ट्रेन लगी थी, लेकिन सामान्य बोगी में भीड़ बहुत थी, सो बैठने की जगह ग्रामीण को नहीं मिली। सामान ऊपर रखवा दिया और कहा कि थोड़ी देर खड़े रहने के बाद आगे सीट मिल जाएगी।

इसी तिथि अर्थात् १४ मई को मेरी फुफेरी बहन की शादी का बहु भोज लोहानीपूर में था, सो मुझे सात बजे तक पहुँचना था, लेकिन साहब का स्पष्ट आदेश था कि गाड़ी खुलने के बाद ही स्टेशन छोड़ना है एवं तदुपरान्त फोन से यह सूचित करना है कि ट्रेन खुल चुकी है। ट्रेन सात बजे खुलने वाली थी, लेकिन ७.३० तक भी गाड़ी नहीं खुली। मुझे पार्टी में जाना था। सो विलंब हो रही थी। आठ बज गए फिर भी ट्रेन नहीं खुली। परेशान होकर मैं प्लेटफॉर्म के बाहर आ गया और पे फोन बूथ से साहब को सूचित कर दिया कि ट्रेन मेरे आखों के सामने खुल गई। साहब ने इसके लिए मुझे बहुत-बहुत धन्यवाद कहा।

मैं सीधा स्टेशन से पूर्वी लोहानिपुर पार्टी में पहुँचा। ८.३० बज चुके थे। भोज प्रारम्भ हो चुका था। मैं भी भोज में सम्मिलित हुआ। अब मुझे अपने आवास गर्दनीबाग लौटना था। रात्रि के दस बज चुके थे। मैं निकलने लगा, तभी रिश्ते में मेरे एक भाई जिनका एक माह पूर्व विवाह हुआ था, के साथ

उनकी नई-नवेली दुल्हन थी, सो उन्होंने भी साथ चलने का अनुरोध किया। मैंने उनका अनुरोध स्वीकार कर लिया और लगभग १० बजे हमलोग समारोह से निकल गए। मुझे चिंता सता रही थी कि आखिर ट्रेन खुली कि नहीं। इसलिए पटना स्टेशन पहुँचते ही मैंने अपने संबंधी को मात्र पाँच मिनट में लौटने का वचन देते हुए स्टेशन के पुल पर चढ़ा। ऊपर से देखा कि ट्रेन लगी हुई है। मैंने सोचा ऐसा नहीं हो सकता है। कोई दूसरी ट्रेन आकार खड़ी हो गई होगी। किन्तु मैं आश्वस्त होना चाहता था कि यह वही ट्रेन तो नहीं है, सो पुल से नीचे उतरा और ट्रेन के पास उसी बोगी के नजदीक पहुँचा, जिसमें उसे चढ़ाया था। जब मैं उस बोगी के पास पहुँचा तो देखता हूँ कि वह ग्रामीण उसी तरह बोगी में भीड़ के बीचों-बीच खड़ा है। मुझे क्रोध आ गया, मैंने उसे डांटते हुए कहा - ७ बजे संध्या से ११.३० रात्रि हो गई है और तुम अभी तक यहीं खड़े हो। उसने कहा सर मैं क्या करूँ? ट्रेन खुल ही नहीं रही है। डर से मेरे हाथ-पैर फूलने लगे। अब क्या करूँ? साहब को तो मैंने गलत सूचना दे दी कि ट्रेन ७ बजे मेरी आखों के सामने खुल गई थी। भागा-भागा मैं स्टेशन गोलंबर अपने संबंधी के पास पहुँचा। संबंधी को रात के सन्नाटे में अपनी नई-नवेली दुल्हन की सुरक्षा की चिंता सता रही थी, सो उन्होंने मुझे विलंब के लिए चार-पाँच डांट पिलाई। मैंने मुंह लटका लिया और

साथ-साथ अपने घर के लिए प्रस्थान किया। १२ बजे रात्रि को घर पहुँचा। सोने बेड पर गया, लेकिन डर से नींद नहीं आ रही थी। सवेरा हुआ। पुनः मुझे चिंता सताने लगी कि आखिर ट्रेन खुली कि नहीं। समाचार पत्र पढ़ने को लिया। लेकिन यह क्या, जिस गाड़ी पर मैंने ग्रामीण को चढ़ाया था, उसके गार्ड का फोटो पेपर में था। हाथ में प्लास्टर और पूरे माथे पर पट्टी। गार्ड की यह तस्वीर हॉस्पिटल की थी। तस्वीर देखकर मेरे तो होश उड़ गए। जब समाचार विस्तार में पढ़ा तो ज्ञात हुआ कि गाड़ी खुलने में विलंब होने के कारण यात्रियों ने गार्ड की बुरी तरह पिटाई कर दी थी और काफी हंगामे के बाद आखिर ट्रेन २ बजे रात्रि में खुली। अब मेरी स्थिति और भी दयनीय हो गई। शरीर बेजान लग रहा था। इसी बीच दो बजे तक मुझे बुद्ध मार्ग स्थित पुष्पांजलि इंकलेव पहुँचना था, जहां जी.डी. अनुभाग के सहायक लेखा अधिकारी श्री अजीत कुमार सिन्हा का गृह प्रवेश था। मैं लगभग तीन बजे पुष्पांजलि इंकलेव पहुँचा। लगभग ४ बजे श्री अजीत कुमार सिन्हा ने मुझे डी.ए.जी. साहब को उनके आवास से लाने को कहा। मैं डर गया और सीधा इंकार कर दिया। मैं दूसरे डी.ए.जी. श्री राऊत सर को लाने प्रस्थान कर गया। लगभग ६.३० बजे पुनः पहुँचा। तब भोज प्रारम्भ होने वाला था। श्री अजीत कुमार सिन्हा ने मुझे प्लेट गिनने का कार्य सौंपा।

उस समय तक मैं कैटरिंग क्या है, नहीं जानता था। सो मुझे प्लेट गिनना अजीब सा कार्य लगा। खैर! जैसे ही कैटर प्लेट रखता, मैं प्लेट की एक से सौ तक गिनती शुरू कर देता। इसी बीच एक कार्यालय कर्मी ने मुझे कहा- अंजनी, डी.ए.जी. साहब (श्री पी.के.तिवारी) आ गए हैं और तुम्हें बुला रहे हैं। मैं बहुत डर गया। मेरी स्थिति "काटो तो खून नहीं" जैसी हो गई। मैंने कहा- ठीक है, आता हूँ और पुनः प्लेट गिनने लगा। थोड़ी ही देर में श्री अजीत कुमार सिन्हा आए और डांटते हुए कहा- अजीब आदमी हो। डी.ए.जी. साहब तुम्हें खोज रहे हैं और तुम जाते क्यों नहीं हो? मैंने कहा, सर मैं तो आपके आदेश के तहत प्लेट गिन रहा हूँ। सर ने कहा- छोड़ो प्लेट गिनना और जल्दी से साहब के पास जाओ। बड़े साहब का सामना करने के सिवा मेरे पास कोई विकल्प नहीं था, सो उनके पास एक अपराधी के समान सर झुकाये हुए पहुंचा। मुझे बड़े साहब फिल्म शोले के गब्बर सिंह के समान लगने लगे। जैसे कह रहे हों - अब तेरा क्या

होगा कालिया? और जैसे मैं कह रहा हूँ- सरदार (सर) मैंने आपका नमक (जी.डी. अनुभाग में बहुत मन से सेवा की है) खाया है। तो अब गोली (निलंबन/बर्खास्तगी) खा। साहब मुझे देखते ही बोले- ट्रेन तो दो बजे रात में खुली थी। तुमने कहा कि ७ बजे ट्रेन खुल गई थी? अब मैं क्या करता। एक झूठ को छुपाने के लिए पुनः दूसरा झूठ बोला। कहा- सर, ट्रेन तो सात बजे ही मेरी आखों के सामने खुली थी। लेकिन लगता है कि ५०-१०० मीटर आगे जाने के बाद पुनः किसी कारणवश प्लेटफॉर्म को वापस लौट गई होगी। उन्होंने दो-चार डांट पिलाई और मैं सर झुकाये पुनः प्लेट गिनने चला गया। सोचता रहा कि एक झूठ ने मुझे कितनी परेशानी में डाल दिया।

सत्य ही कहा गया है कि सत्य पर असत्य का परत लंबे समय तक टिक नहीं सकता है। मुझे समझ में आ गया था कि हजार झूठ बोलने से अच्छा एक कड़वा सत्य बोलना है।





उमेश चौधरी
वरीय लेखा अधिकारी

एक अनछुए शहर का सफर

देश के अनेक राज्य तथा उनके विभिन्न शहरों को देख लेने के पश्चात हमने तय किया कि क्यों न इस बार किसी अनछुए शहर की ओर रुख किया जाए। पर्यटन स्थल के प्रति अपनी उत्सुकता को उस समय पंख लग गया, जब बेटा का पदस्थापन विशाखापत्तनम में हो गया। इस शहर के बारे में सुनते आ रहे थे कि देश के स्वच्छतम शहरों में विशाखापत्तनम का तीसरा स्थान है। इसे clean and green city भी कहा जाता है। इस शहर को नजदीक से देखने कि इच्छा बलवती होने लगी। अपनी तो इच्छा थी ही, पत्नी का दवाब भी बनने लगा। दवाब बनने का कारण भी है। एक तो उस शहर का आकर्षण और दूसरा वात्सल्य प्रेम। माँ-बाप के दिल में बच्चों के प्रति कितना प्यार होता है इसकी अनुभूति तभी होती है जब हम स्वयं माँ-बाप बनते हैं। कुछ दिन बच्चों से अलग रहने पर मिलने की व्याकुलता होने लगती है। अपनी इच्छा तथा पुत्र मिलन की पत्नी की व्याकुलता को देखते हुए जुलाई २०१८ में एक सप्ताह के अवकाश पर हमलोग विशाखापत्तनम के लिए प्रस्थान कर गए। विशाखापत्तनम एयरपोर्ट पर उतरते ही बेटा का

फोन आ गया कि वह बाहर हमलोगों का इंतजार कर रहा है। बाहर आते ही हम लोग कर में बैठ गए तथा शहर की ओर चलने लगे। शहर में प्रवेश करते ही साफ सुथरी सुंदर सड़क, यातायात की सुंदर व्यवस्था, सड़क के किनारे सुव्यवस्थित ढंग से बने सुंदर मकान तथा बंगले को देख कर एक बार ऐसा लगा कि हमलोग किसी महानगर में तो नहीं आ गए। विशाखापत्तनम कोई महानगर तो नहीं, लेकिन तेजी से विकसित होता एक भव्य एवं सुंदर शहर जरूर है। वातावरण में फैली समुद्री हवाओं की सुगंध से ऐसा एहसास हो गया कि सागर तट यहाँ से दूर नहीं है। तीन ओर से छोटी-छोटी एवं हरी-भरी पहाड़ियों से घिरे विशाखापत्तनम के एक तरफ विस्तृत सागर तट है। हरे-भरे परिदृश्यों, सुंदर समुद्री किनारों और खूबसूरत पहाड़ियों के कारण विशाखापत्तनम का नाम एक प्रसिद्ध पर्यटक स्थल के रूप में आने लगा है। यहाँ का बंदरगाह भारत का चौथा सबसे बड़ा बन्दरगाह है। आर्थिक रूप से भी यह एक विकसित शहर है। इसे आंध्र प्रदेश की आर्थिक राजधानी भी कहा जाता है। हालांकि यह एक जिला मुख्यालय है, जहाँ भारतीय नौ सेना के पूर्वी

कमांड का मुख्यालय भी है। यहाँ घूमने तथा देखने लायक बहुत ही सुंदर एवं मनमोहक जगह है। यहाँ सागर की लहरों की दिलफरेब अदाओं का लुत्फ उठाने के लिए अनेक सुंदर-सुंदर सागर तट हैं, जहाँ से पर्यटक सागर की मचलती लहरों का सौन्दर्य तथा दूर तक फैली अथाह जलराशि का आनंद उठाते हैं। रामकृष्ण बीच पर पहुँचकर तो सैलानी सागर की मतवाली लहरों के जल से सराबोर हुए बिना नहीं रह पाते। इसके अलावे सागर तट पर खाने-पीने के लिए कुछ रेस्तरां, छोटे-छोटे दुकान तथा सड़क के किनारे बड़े-बड़े होटल भी नजर आते हैं। वहाँ के सागर तट पर पर्यटकों के लिए एक विशेष आकर्षण और है। वह है सबमेरीन म्यूजियम यानि पनडुब्बी संग्रहालय। पनडुब्बी की अंदरूनी दुनियां को दर्शाता यह संग्रहालय देश का एक मात्र संग्रहालय है। इसके अलावा यहाँ विशाखा संग्रहालय, एक्वेरियम, वुडा पार्क, डॉल्फिन नाज्ज नामक छोटी पहाड़ी, कैलाशगिरि की पहाड़ी, जहां शिव-पार्वती की बेहद सौम्य प्रतिमा स्थापित है। इस पहाड़ी से एकतरफ जहां विशाखापत्तनम का विहंगम दृश्य नजर आता है तो दूसरी तरफ सागर का विशाल तट। यहाँ देखने लायक अनेक घाटियाँ भी हैं, जिनमें अरकु घाटी मुख्य है। यहाँ वराह नरसिंह का एक भव्य मंदिर भी है, जिसे सिंहाचलम मंदिर कहते हैं। यह मंदिर दक्षिण

भारत में स्थित भगवान विष्णु के महत्वपूर्ण मंदिरों में से एक है।

मैं अपनी दिनचर्या के अनुसार प्रतिदिन सुबह की सैर पर निकल जाया करता था। बाहर निकलने पर वहाँ की सड़कें एवं गलियाँ बिलकुल साफ-सुथरी नजर आती थी। ऐसा लगा कि सफाई का कार्य सूर्योदय से पहले या यूँ कहें कि लोगों के घरों से निकलने से पहले सम्पन्न करा लिया जाता है। शाम में समुद्र के किनारे घूमने के लिए हमलोग निकल जाते थे। समुद्र के किनारे तथा उसके बगल से गुजरने वाली सड़कें अत्यंत ही साफ-सुथरी तथा चमकती हुई नजर आती थी। सड़क के किनारे लगे पोल में जगह-जगह कूड़ादान लटका हुआ नजर आया, जिससे राह चलते राहगीर यदि कुछ फेंकना चाहे तो वह भी सड़क पर न फेंककर उस कूड़ादान में डाल सके। एक जगह तो हमलोगों को ऐसा लगा मानो वहाँ का एक-एक नागरिक स्वच्छता के प्रति कितना जागरूक तथा सजग है। सागर तट पर घूमने के क्रम में एक दिन हमलोगों ने डाभ (पानी वाला नारियल) बेचनेवाले को, जो टोकरी में नारियल बेच रहा था, बुलाया। उसने नारियल काटकर उसका पानी पीने के लिए दिया। मैंने उसे पैसा दे दिया ताकि वह आगे बढ़कर नारियल बेच सके तथा हमलोग स्थिर से नारियल पानी पीने का आनंद ले सकें। लेकिन वह आदमी वहाँ से तबतक नहीं हटा

जबतक कि हमलोगों ने नारियल पानी नहीं पी लिया। नारियल पानी पीने के बाद उसने उस खाली नारियल तथा उसके कटे हुए भाग को समेटा तथा उसे उचित जगह पर रखे कूड़ेदान में डालने के पश्चात ही वह आदमी वहाँ से आगे बढ़ा। उस समय यह महसूस हुआ कि आखिर यह शहर स्वच्छता के मामले में देश में तीसरे स्थान पर क्यों है। किसी भी शहर को साफ-सुथरा रखने के लिए सिर्फ शासन-प्रशासन ही नहीं, बल्कि वहाँ बसे नागरिकों की भी ज़िम्मेदारी होनी चाहिए।

इस तरह से एक सप्ताह के अवकाश के पश्चात वापस लौटने का समय आ गया। हालांकि इस सुंदर एवं मनोरम शहर के लिए एक सप्ताह का समय काफी कम था। मेरे लिए तो लाचारी थी, क्योंकि अवकाश एक सप्ताह का ही था। लेकिन पत्नी इतनी जल्दी आने के लिए तैयार नहीं थी। इस आश्वासन पर कि हमलोग जल्दी ही पुनः यहाँ आएंगे, पत्नी वापस लौटने के लिए तैयार हुई और हमलोग उस शहर को अलविदा कह वापस पटना लौट गए।





भारती
पुत्री-संतोष कुमार सिंह
लेखाकार

यह पर्यावरण हमारा

हमको जीवन देता है यह पर्यावरण हमारा।
इसे नष्ट करने से होगा जीवन नष्ट हमारा। 11।

अज्ञानी हम, ज्ञानराशि औरों को बाँट रहे हैं।
उसी डाल पर बैठ उसी, को जड़ से काट रहे हैं। 12।

प्रकृति माँ ने पाला हमको अपना दूध पिलाकर।
उसको ही पीड़ित करते हम, कण-कण जला-जलाकर। 13।

सोचो फिर कैसे हो पाएगा कल्याण हमारा।
इसे नष्ट करने से होगा जीवन नष्ट हमारा। 14।

पेट काटकर पर्वत का हम पत्थर-बाजरी लाते।
काट-काटकर लकड़ी को हम, भू को नंगा करते जाते। 15।

नंगे पर्वत और किसी से क्यों कर शर्म करेंगे।
निश्चित हमें भोगने होंगे, जैसे कर्म करेंगे। 16।

कुदरत को अपमानित कर कैसे हो मान हमारा।
इसे नष्ट करने से होगा जीवन नष्ट हमारा। 17।

धरती माँ ने अन्न, फूल-फल देकर हमको पाला।
रस बरसाते सूर्य-चंद्रमा देकर हमें उजाला। 18।

पवन प्राण बन स्वयं हमारी श्वासों में बहते हैं।
इंद्र स्वयं जलधारा के, हर कण-कण में हँसते हैं। १९।

मानवता को मिला निरंतर सुखकर सत्य सहारा।
इसे नष्ट करने से होगा जीवन नष्ट हमारा। १०।

सरिता-सर का जल-जीवन की प्रतिपल प्यास बुझाता।
प्रकृति प्राणियों का सचमुच है माँ-बेटे का नाता। ११।

पुत्रों के नाते समझो क्या है कर्तव्य हमारा।
इसे नष्ट करने से होगा जीवन नष्ट हमारा। १२।





बंशीधर मिश्र
वरीय लेखा अधिकारी

जीवन

जब-जब जो-जो होना है,
तब-तब वो-वो होता है।

होते (चलते) जाना ही जीवन है,
न होना तो बस उलझन है।

उलझन के बिना जीवन ही,
लगता सुगम-निरर्थक है।

है उलझन तो सचमुच ही में,
सुलझन को जीना जीवन है।

पल-पल हर पल सांसें चलतीं,
पहचान यही तो जीवन है।

जो चली गई ये सांसें समझो,
अंत यहीं पे जीवन है।

जीवन को जीना सीख लिया जो,
सुखद उसी का जीवन है।

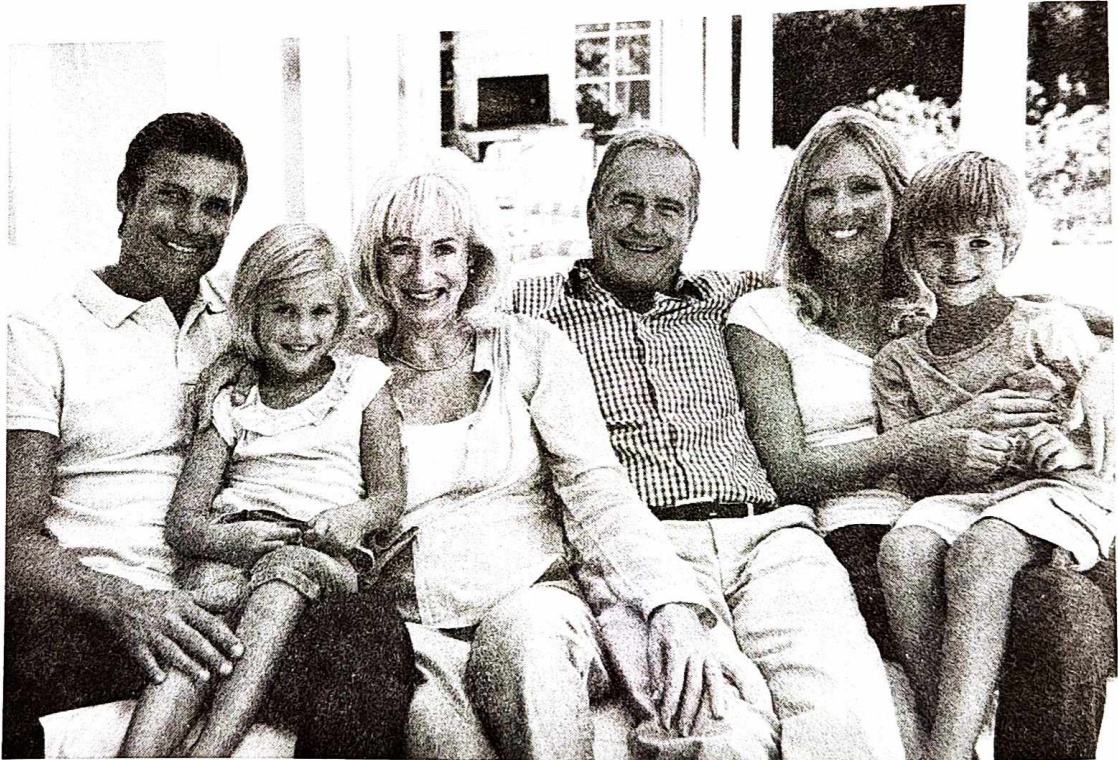
राहें जो भटकीं कुसंगत की,
गई गर्त वह जीवन है।

सत्संग की संगत मिल जाए तो,
अर्थपूर्ण वह जीवन है।

भटके को राह दिखाना भी तो,
परोपकार का जीवन है।

'मैं' से बेहतर 'हम' को समझो,
मिलकर जीना ही तो जीवन है।

हैं स्वार्थपूर्ण मैं का जीवन,
निःस्वार्थ 'हम' ही जीवन है।



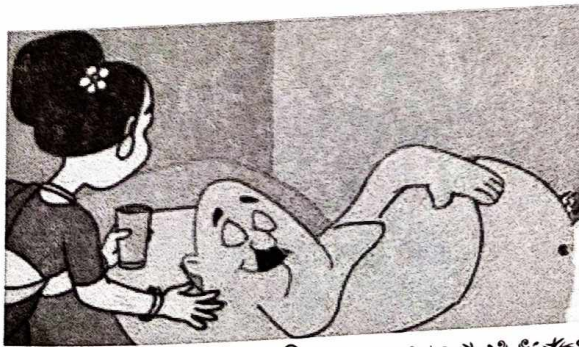


आदित्य कश्यप
पुत्र- संतोष कुमार सिंह
लेखाकार

आलसी ब्राह्मण

एक बार की बात है। एक गाँव में एक ब्राह्मण रहता था। वह वहाँ अपनी पत्नी और बच्चों के साथ रहता था। वह सुबह उठकर कुएँ के पास जाता और नहाकर वापस घर आ जाता था। उसके पास किसी चीज की कमी नहीं थी। एक बड़ा सा खेत था, जिसमें तरह-तरह की सब्जियाँ और फल उगते थे। बस उसकी एक ही कमी थी कि वह बहुत आलसी था। उसकी इस आदत से उसके परिवार वाले दुखी थे। उसकी पत्नी उससे खेत जाने के लिए बोलती रहती थी, लेकिन वह उसकी बात ही नहीं सुनता। एक बार उसके सामने एक राक्षस आया और बोला कि मालिक मैं वो काम करूँगा जो आप कहेंगे। ब्राह्मण बोला- जाओ खेतों को पानी दे आओ। कुछ देर बाद वह राक्षस वापस आ गया। ब्राह्मण हैरान होकर बोला- तुम इतने बड़े से खेत में इतनी जल्दी पानी दे कर आ गए। मालिक मुझे जल्दी एक

और काम दीजिये। ब्राह्मण सोच में पड़ गया कि अब इसे कौन सा काम दूँ? राक्षस बोला- मालिक मुझे काम दीजिये वरना मैं आपको ही खा जाऊँगा। ब्राह्मण ने उसे बहुत से काम दिये और वह उन सब को पूरा कर के वापस आ गया। ब्राह्मण अब अत्यंत भयभीत हुआ कि उस राक्षस को जो भी काम दूँगा, तुरंत पूरा कर लेगा और फिर नया काम कहाँ से लाऊँगा। उसने यह बात अपनी पत्नी को बतायी। उसकी पत्नी बहुत ही चालाक थी। ब्राह्मण से बोली कि अच्छा ठीक है, अब मैं इसे काम देती हूँ। उसने अपना एक घुंघरैला बाल तोड़ा और कहा अगर तुम इसे सीधा करके ले आए तो तुम मेरे पति को खा लेना और अगर तुम यह नहीं कर पाए तो तुम्हें यहाँ से जाना पड़ेगा। राक्षस लाख प्रयास के बावजूद बाल सीधा नहीं कर पाया और वहाँ से चला गया।





मनमीत कुमार
वरीय लेखा अधिकारी

गीता का माहात्म्य

गीता का वर्णन करना बहुत हद तक संभव नहीं है। इसका आशय इतना गम्भीर है कि आजीवन निरन्तर अभ्यास करते रहने पर भी इसका अन्त नहीं हो सकता। गीता शास्त्र में मनुष्य मात्र का कर्तव्य है, चाहे वह किसी भी वर्ण, आश्रम में स्थित हो, भगवान में श्रद्धा और भक्ति अवश्य बनाये रखे। परम रहस्यमय गीता के आदेश से आजीवन गृहस्थ में रहकर अपने कर्तव्य का पालन किया जा सकता है। अतः मनुष्य का यह कर्तव्य है कि अन्य लोगों को तथा बालकों को अनन्य भाव सहित श्री गीता जी का अध्ययन कराये एवं स्वयं भी इसका मनन करें, ताकि मानव मात्र कल्याण हेतु तत्पर हो जाये।

जीवन सार्थक करने हेतु कुछ महत्वपूर्ण गीता के श्लोकों का भाव निम्नवत है:-

- अर्जुन ने उन दोनों ही सेनाओं में स्थित ताऊ-चाचों को, दादों-परदादों को, गुरुओं को, मामाओं को, भाईयों को, पुत्रों को, पौत्रों को तथा मित्रों आदि को देखा।
- उन उपस्थित सम्पूर्ण बन्धुओं को देखकर कुन्तीपुत्र अर्जुन अत्यन्त

करुणा से युक्त होकर शोक करते हुए यह वचन बोले।

- हे कृष्ण! युद्धक्षेत्र में डटे हुए युद्ध के अभिलाषी इस स्वजनसमुदाय को देखकर मेरे अंग शिथिल हुए जा रहे हैं और मुख सूखा जा रहा है तथा मेरे शरीर में कम्प एवं रोमांच हो रहा है।
- हाथ से गाण्डीव धनुष गिर रहा है और त्वचा भी बहुत जल रही है तथा मेरा मन भ्रमित सा हो रहा है, इसलिये मैं खड़ा रहने को भी समर्थ नहीं हूँ ॥
- हे केशव! मैं लक्ष्मणों को भी विपरीत ही देख रहा हूँ तथा युद्ध में स्वजनसमुदाय को मारकर कल्याण भी नहीं देखता।
- हे कृष्ण! मैं न तो विजय चाहता हूँ और न राज्य तथा सुखों को ही। हे गोविन्द! हमें ऐसे राज्य अथवा ऐसे भोगों और जीवन से क्या लाभ है?
- यह आत्मा किसी काल में भी न तो जन्मती है और न मरती ही है तथा न यह उत्पन्न होकर फिर होने वाली ही है, क्योंकि यह अजन्मा, नित्य, सनातन

और पुरातन है; शरीर के मारे जाने पर भी यह नहीं मरती ।।

• अर्जुन के वेदना सुन श्री कृष्ण ने कहा:- जो पुरुष इस आत्मा को नाशरहित, नित्य, अजन्मा और अव्यय जानता है, वह पुरुष कैसे किसको मरवाता है और कैसे किसको मारता है?

• जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्याग कर दूसरे नये वस्त्रों को ग्रहण करता है, वैसे ही जीवात्मा पुराने शरीरों को त्याग कर दूसरे नये शरीरों को प्राप्त होती है ।।

• यह आत्मा अव्यक्त, अचिन्त्य और विकाररहित है। इसलिये अर्जुन! इस आत्मा को उपर्युक्त प्रकार से जानकर तू शोक करने के योग्य नहीं है अर्थात् तेरा शोक करना उचित नहीं है।

• किन्तु यदि तू इस आत्मा को सदा जन्म लेने वाली मानते हो, तो भी तू इस प्रकार शोक करने के योग्य नहीं हो ।।

• क्योंकि इस मान्यता के अनुसार जन्म हुए की मृत्यु निश्चित है और मरे हुए का जन्म निश्चित है। इससे भी इस बिना उपायवाले विषय में तू शोक करने के योग्य नहीं है ।।

• वेद उपर्युक्त प्रकार से तीनों गुणों के

कार्यरूप समस्त भोगों एवं उनके साधनों का प्रतिपादन करनेवाले हैं। उन भोगों एवं उनके साधनों में आसक्तिहीन, हर्ष-शोकादि द्वन्द्वों से रहित, नित्यवस्तु परमात्मा में स्थित, योग प्राप्ति का नाम 'योग' है।

• सब ओर से परिपूर्ण जलाशय के प्राप्त हो जाने पर छोटे जलाशय से मनुष्य का जितना प्रयोजन रहता है, ब्रह्म को तत्त्व से जानने वाले ब्राह्मण का समस्त वेदों से उतना ही प्रयोजन रह जाता है ।।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि ।।

• तेरा कर्म करने में ही अधिकार है, उसके फलों में कभी नहीं। इसलिये तू कर्मों के फल के संबंध में मत सोच, ताकि तेरी कर्म न करने में भी आसक्ति न हो ।।

• तू आसक्ति को त्यागकर तथा सिद्धि और असिद्धि में समान बुद्धिवाला होकर योग में स्थित हुए कर्तव्य कर्मों को कर। यह समत्व ही योग कहलाता है ।।

• इसलिये तू समबुद्धि में ही रक्षा का उपाय ढूँढ अर्थात् बुद्धियोग का ही आश्रय ग्रहण कर; क्योंकि फल के हेतु बननेवाले अत्यन्त दीन हैं ।।

• समबुद्धि युक्त पुरुष पुण्य और पाप दोनों को इसी लोक में त्याग देता है अर्थात् उनसे मुक्त हो जाता है। इससे तू समत्वरूप योग में लग जा; इस समत्वरूप योग की कर्मों में कुशलता है अर्थात् कर्मबन्धन से छूटने का उपाय है॥

• समबुद्धि से युक्त ज्ञानीजन कर्मों से उत्पन्न होने वाले फल को त्यागकर जन्मरूप बन्धन से मुक्त हो निर्विकार परम पद को प्राप्त हो जाते हैं॥

• जिस काल में तेरी बुद्धि मोहरूप दलदल को भलि-भांति पार कर जायेगी, उसी समय तू सुनने में आने वाले इस लोक और परलोक संबंधी सभी भोगों से वैराग्य को प्राप्त हो जाएगा॥

• भांति-भांति के वचनों को सुनने से विचलित हुई तेरी बुद्धि जब परमात्मा में अचल और स्थिर ठहर जायेगी, तब तू योग को प्राप्त हो जायेगा अर्थात् तेरा परमात्मा से नित्य संयोग हो जायेगा॥

• हजारों मनुष्यों में कोई एक मेरी प्राप्ति के लिये यत्न करता है और उन यत्न करने वाले योगियों में भी कोई एक मेरे परायण होकर मुझको तत्व से अर्थात् यथार्थरूप से जानता है॥

पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि और अहंकार, इस प्रकार यह आठ प्रकार से विभाजित मेरी प्रकृति है। यह आठ प्रकार के भेदोंवाली मेरी जड़ प्रकृति है। मैं सम्पूर्ण जगत का प्रभाव तथा प्रलय हूँ। अर्थात् सम्पूर्ण जगत का मूल कारण हूँ॥

मुझसे भिन्न दूसरा कोई भी परम कारण नहीं है। यह सम्पूर्ण जगत सूत्र में मनियों के सदृश मुझमें गूँथा हुआ है॥

हे अर्जुन! मैं जम में रस हूँ, चन्द्रमा और सूर्य में प्रकाश हूँ, सम्पूर्ण वेदों में आकार हूँ, आकाश में शब्द और पुरुषों में पुरुषत्व हूँ॥

• मैं पृथ्वी में पवित्र गन्ध और अग्नि में तेज हूँ तथा सम्पूर्ण भूतों में उनका जीवन हूँ और तपस्वियों में तप हूँ॥

• सम्पूर्ण भूतों का सनातन बीज मुझमें है। मैं बुद्धिमानों की बुद्धि और तेजस्वियों का तेज हूँ॥

• मैं बलवानों की आसक्ति और कामनाओं से रहित बल अर्थात् सामर्थ्य हूँ और सब भूतों में धर्म के अनुकूल अर्थात् शास्त्र के अनुकूल काम हूँ। और भी जो सत्त्वगुण से उत्पन्न होनेवाले

भाव हैं और जो रजोगुण से तथा तमोगुण से होनेवाले भाव हैं, उन सबको तू मुझसे ही हानेवाले हैं। ऐसा जान, परन्तु वास्तव में उनमें मैं और वे मुझमें नहीं हैं।।

गुणों के कार्यरूप सात्विक, राजस और तामस इन तीनों प्रकार के भावों से यह सारा संसार प्राणिसमुदाय मोहित हो रहा है। इसलिये इन तीनों गुणों से परे मुझ अविनाशी को नहीं जानते।।

क्योंकि यह अलौकिक अर्थात् अति अद्भुत त्रिगुणमयी मेरी माया बड़ी दुस्तर है; परन्तु जो पुरुष केवल मुझको ही निरन्तर भजते हैं, वे इस माया का उल्लंघन कर जाते हैं। अर्थात् संसार से तर जाते हैं।।

माया के द्वारा आसुर स्वभाव को धारण किये हुए मनुष्यों में नीच दूषित कर्म करनेवाले मूढ़ लोग मुझको नहीं भजते।।

उत्तम कर्म करने वाले जिज्ञासु और ज्ञानी भक्तजन मुझको भजते हैं।।

अर्जुन ने कहा हे पुरुषोत्तम! वह ब्रह्मा क्या है? अध्यात्म क्या है? कर्म क्या है? अधिभूत नाम से क्या कहा गया है और अधिदैव किसको कहते हैं।।

हे मधुसूदन! यहाँ अधियज्ञ कौन है? और वह इस शरीर में कैसे है? तथा युक्तचित्तवाले पुरुषों द्वारा अन्त समय में आप किस प्रकार जानने में आते हैं।।

कृष्ण ने कहा कि यह मनुष्य अन्तकाल में जिस-जिस भाव को भी स्मरण करता हुआ शरीर का त्याग करता है, उस-उसको ही प्राप्त होता है; क्योंकि वह सदा उसी भाव से भावित रहता है।।

इसलिये हे अर्जुन! तू सब समय में निरन्तर मेरा स्मरण कर और युद्ध भी कर। इस प्रकार मुझमें अर्पण किये हुए मन-बुद्धि से युक्त होकर तू निःसन्देह मुझको ही प्राप्त होगा।।

हे पार्थ! यह नियम है कि परमेश्वर के ध्यान के अभ्यासरूप योग से युक्त, दूसरी ओर न जानेवाले चित्त से निरन्तर चिन्तन करता हुआ मनुष्य परम प्रकाश रूप दिव्य पुरुष को अर्थात् परमेश्वर को ही प्राप्त होता है।।

कृष्ण कहते हैं- मैं सब भूतों में समभाव से व्यापक हूँ, न कोई मेरा अप्रिय है और न प्रिय है; परन्तु जो भक्त मुझको प्रेम से भजते हैं, वे मुझमें हैं और मैं भी उनमें प्रत्यक्ष प्रकट हूँ।।

यदि कोई दुराचारी भी अनन्य भाव से

संवादरूप गीताशास्त्र को पढ़ेगा, उसके द्वारा भी मैं ज्ञान यज्ञ से पूजित होऊँगा-ऐसा मेरा मत है॥

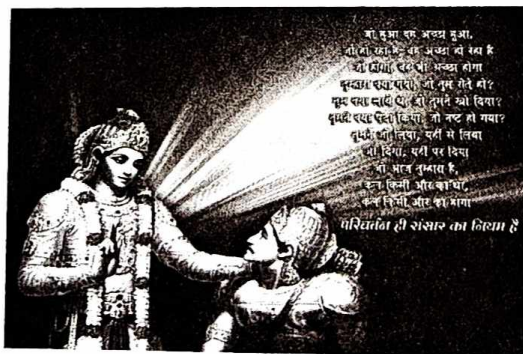
जो मनुष्य श्रद्धायुक्त और दोषदृष्टि रहित होकर इस गीताशास्त्र का श्रवण करेगा, वह भी पापों से मुक्त होकर उत्तम कर्म करनेवालों के श्रेष्ठ लोकों को प्राप्त होगा।।

श्रीमद्भगवद् गीता अनन्त रहस्यों में पूर्ण है। उपर्युक्त कुछ सार के द्वारा गीता के भाव को समझने की कोशिश की गयी है। जो पुरुष परम ब्रह्म और प्रेम विशुद्ध भक्ति में अपने हृदय को भरकर भागवत गीता का मनन करते हैं, वे ही अन्तःकरण में नित्य नये-नये परमानन्द दायक अनुपम और दिव्य भावों का अनुभव करते हैं।

श्री कृष्ण ने कहा, जो कर्म परिणाम, हानि, हिंसा और सामर्थ्य को न विचार कर केवल अज्ञान से आरम्भ किया जाता है, वह तामस कहा जाता है॥

जो पुरुष इस धर्ममय हम दोनों के

समाप्त



और पुरातन है; शरीर के मारे जाने पर भी यह नहीं मरती ।।

• अर्जुन के वेदना सुन श्री कृष्ण ने कहा:- जो पुरुष इस आत्मा को नाशरहित, नित्य, अजन्मा और अव्यय जानता है, वह पुरुष कैसे किसको मरवाता है और कैसे किसको मारता है?

• जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्याग कर दूसरे नये वस्त्रों को ग्रहण करता है, वैसे ही जीवात्मा पुराने शरीरों को त्याग कर दूसरे नये शरीरों को प्राप्त होती है।।

• यह आत्मा अव्यक्त, अचिन्त्य और विकाररहित है। इसलिये अर्जुन! इस आत्मा को उपर्युक्त प्रकार से जानकर तू शोक करने के योग्य नहीं है अर्थात् तेरा शोक करना उचित नहीं है।

• किन्तु यदि तू इस आत्मा को सदा जन्म लेने वाली मानते हो, तो भी तू इस प्रकार शोक करने के योग्य नहीं हो।।

• क्योंकि इस मान्यता के अनुसार जन्में हुए की मृत्यु निश्चित है और मरे हुए का जन्म निश्चित है। इससे भी इस बिना उपायवाले विषय में तू शोक करने के योग्य नहीं है।।

• वेद उपर्युक्त प्रकार से तीनों गुणों के

कार्यरूप समस्त भोगों एवं उनके साधनों का प्रतिपादन करनेवाले हैं। उन भोगों एवं उनके साधनों में आसक्तिहीन, हर्ष-शोकादि द्वन्द्वों से रहित, नित्यवस्तु परमात्मा में स्थित, योग प्राप्ति का नाम 'योग' है।

• सब ओर से परिपूर्ण जलाशय के प्राप्त हो जाने पर छोटे जलाशय से मनुष्य का जितना प्रयोजन रहता है, ब्रह्म का तत्त्व से जानने वाले ब्राह्मण का समस्त वेदों से उतना ही प्रयोजन रह जाता है।।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि ।।

• तेरा कर्म करने में ही अधिकार है, उसके फलों में कभी नहीं। इसलिये तू कर्मों के फल के संबंध में मत सोच, ताकि तेरी कर्म न करने में भी आसक्ति न हो।।

• तू आसक्ति को त्यागकर तथा सिद्धि और असिद्धि में समान बुद्धिवाला होकर योग में स्थित हुए कर्तव्य कर्मों को कर। यह समत्व ही योग कहलाता है।।

• इसलिये तू समबुद्धि में ही रक्षा का उपाय ढूँढ अर्थात् बुद्धियोग का ही आश्रय ग्रहण कर; क्योंकि फल के हेतु बननेवाले अत्यन्त दीन हैं।।

- समबुद्धि युक्त पुरुष पुण्य और पाप दोनों को इसी लोक में त्याग देता है अर्थात् उनसे मुक्त हो जाता है। इससे तू समत्वरूप योग में लग जा; इस समत्वरूप योग की कर्मों में कुशलता है अर्थात् कर्मबन्धन से छूटने का उपाय है।।
- समबुद्धि से युक्त ज्ञानीजन कर्मों से उत्पन्न होने वाले फल को त्यागकर जन्मरूप बन्धन से मुक्त हो निर्विकार परम पद को प्राप्त हो जाते हैं।।
- जिस काल में तेरी बुद्धि मोहरूप दलदल को भलि-भांति पार कर जायेगी, उसी समय तू सुनने में आने वाले इस लोक और परलोक संबंधी सभी भोगों से वैराग्य को प्राप्त हो जाएगा।।
- भांति-भांति के वचनों को सुनने से विचलित हुई तेरी बुद्धि जब परमात्मा में अचल और स्थिर ठहर जायगी, तब तू योग को प्राप्त हो जायेगा अर्थात् तेरा परमात्मा से नित्य संयोग हो जायेगा।।
- हजारों मनुष्यों में कोई एक मेरी प्राप्ति के लिये यत्न करता है और उन यत्न करने वाले योगियों में भी कोई एक मेरे परायण होकर मुझको तत्त्व से अर्थात् यथार्थरूप से जानता है।।

पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि और अहंकार, इस प्रकार यह आठ प्रकार से विभाजित मेरी प्रकृति है। यह आठ प्रकार के भेदोंवाली मेरी जड़ प्रकृति है। मैं सम्पूर्ण जगत का प्रभाव तथा प्रलय हूँ। अर्थात् सम्पूर्ण जगत का मूल कारण हूँ।।

मुझसे भिन्न दूसरा कोई भी परम कारण नहीं है। यह सम्पूर्ण जगत् सूत्र में मनियों के सदृश मुझमें गूँथा हुआ है।।

हे अर्जुन! मैं जम में रस हूँ, चन्द्रमा और सूर्य में प्रकाश हूँ, सम्पूर्ण वेदों में आकार हूँ, आकाश में शब्द और पुरुषों में पुरुषत्व हूँ।।

मैं पृथ्वी में पवित्र गन्ध और अग्नि में तेज हूँ तथा सम्पूर्ण भूतों में उनका जीवन हूँ और तपस्वियों में तप हूँ।।

सम्पूर्ण भूतों का सनातन बीज मुझमें है। मैं बुद्धिमानों की बुद्धि और तेजस्वियों का तेज हूँ।।

मैं बलवानों की आसक्ति और कामनाओं से रहित बल अर्थात् सामर्थ्य हूँ और सब भूतों में धर्म के अनुकूल अर्थात् शास्त्र के अनुकूल काम हूँ। और भी जो सत्त्वगुण से उत्पन्न होनेवाले

भाव हैं और जो रजोगुण से तथा तमोगुण से होनेवाले भाव हैं, उन सबको तू 'मुझसे ही हानेवाले हैं' ऐसा जान, परन्तु वास्तव में उनमें मैं और वे मुझमें नहीं हैं।।

• गुणों के कार्यरूप सात्विक, राजस और तामस इन तीनों प्रकार के भावों से यह सारा संसार प्राणिसमुदाय मोहित हो रहा है। इसलिये इन तीनों गुणों से परे मुझ अविनाशी को नहीं जानते।।

• क्योंकि यह अलौलिक अर्थात् अति अद्भुत त्रिगुणमयी मेरी माया बड़ी दुस्तर है; परन्तु जो पुरुष केवल मुझको ही निरन्तर भजते हैं, वे इस माया का उल्लंघन कर जाते हैं। अर्थात् संसार से तर जाते हैं।।

• माया के द्वारा आसुर स्वभाव को धारण किये हुए मनुष्यों में नीच दूषित कर्म करनेवाले मूढ़ लोग मुझको नहीं भजते।।

• उत्तम कर्म करने वाले जिज्ञासु और ज्ञानी भक्तजन मुझको भजते हैं।।

• अर्जुन ने कहा हे पुरुषोत्तम! वह ब्रह्मा क्या है? अध्यात्म क्या है? कर्म क्या है? अधिभूत नाम से क्या कहा गया है और अधिदैव किसको कहते हैं।।

हे मधुसूदन! यहाँ अधियज्ञ कौन है? और वह इस शरीर में कैसे है? तथा युक्तचित्तवाले पुरुषों द्वारा अन्त समय में आप किस प्रकार जानने में आते हैं।।

• कृष्ण ने कहा कि यह मनुष्य अन्तकाल में जिस-जिस भाव को भी स्मरण करता हुआ शरीर का त्याग करता है, उस-उसको ही प्राप्त होता है; क्योंकि वह सदा उसी भाव से भावित रहता है।।

• इसलिये हे अर्जुन! तू सब समय में निरन्तर मेरा स्मरण कर और युद्ध भी कर। इस प्रकार मुझमें अर्पण किये हुए मन-बुद्धि से युक्त होकर तू निःसन्देह मुझको ही प्राप्त होगा।।

• हे पार्थ! यह नियम है कि परमेश्वर के ध्यान के अभ्यासरूप योग से युक्त, दूसरी ओर न जानेवाले चित्त से निरन्तर चिन्तन करता हुआ मनुष्य परम प्रकाश रूप दिव्य पुरुष को अर्थात् परमेश्वर को ही प्राप्त होता है।।

• कृष्ण कहते हैं- मैं सब भूतों में समभाव से व्यापक हूँ, न कोई मेरा अप्रिय है और न प्रिय है; परन्तु जो भक्त मुझको प्रेम से भजते हैं, वे मुझमें हैं और मैं भी उनमें प्रत्यक्ष प्रकट हूँ।।

• यदि कोई दुराचारी भी अनन्य भाव से

मेरा भक्त होकर मुझको भजता है तो वह साधु ही मानने योग्य है; क्योंकि वह यथार्थ निश्चय वाला है। अर्थात् उसने भली-भाँति निश्चय कर लिया है कि परमेश्वर के भजन के समान अन्य कुछ भी नहीं है।।

कृष्ण ने जब अपने दिव्य रूप को अर्जुन को दिखाया तो अर्जुन ने कहा कि हे महात्मन्! यह स्वर्ग और पृथ्वी के बीच का सम्पूर्ण आकाश तथा सब दिशाएँ एक आपसे ही परिपूर्ण हैं तथा आपके इस अलौकिक और भयंकर रूप को देखकर तीनों लोक अति व्यथा को प्राप्त हो रहे हैं। अतः आप सामान्य रूप में आ जायें।

श्री कृष्ण ने कहा, जो कर्म परिणाम, हानि, हिंसा और सामर्थ्य को न विचार कर केवल अज्ञान से आरम्भ किया जाता है, वह तामस कहा जाता है।।

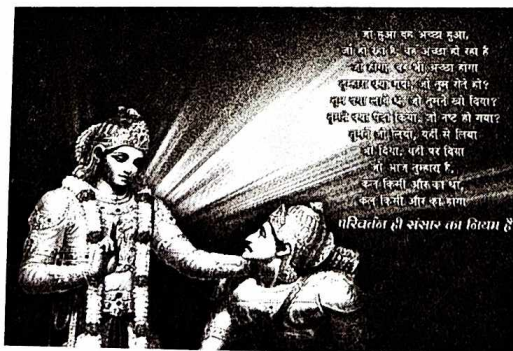
जो पुरुष इस धर्ममय हम दोनों के

संवादरूप गीताशास्त्र को पढ़ेगा, उसके द्वारा भी मैं ज्ञान यज्ञ से पूजित होऊँगा-ऐसा मेरा मत है।।

जो मनुष्य श्रद्धायुक्त और दोषदृष्टि रहित होकर इस गीताशास्त्र का श्रवण करेगा, वह भी पापों से मुक्त होकर उत्तम कर्म करनेवालों के श्रेष्ठ लोकों को प्राप्त होगा।।

श्रीमद्भगवद् गीता अनन्त रहस्यों में पूर्ण है। उपर्युक्त कुछ सार के द्वारा गीता के भाव को समझने की कोशिश की गयी है। जो पुरुष परम ब्रह्म और प्रेम विशुद्ध भक्ति में अपने हृदय को भरकर भागवत गीता का मनन करते हैं, वे ही अन्तःकरण में नित्य नये-नये परमानन्द दायक अनुपम और दिव्य भावों का अनुभव करते हैं।

समाप्त



चेतना

64



स्वतंत्रता दिवस 2018 के सुअवसर पर माननीय महालेखाकार
(लेखा एवं हकदारी) झंडोत्तोलन के बाद।



स्वतंत्रता दिवस 2018 के अवसर पर महालेखाकार महोदया के साथ कार्यालय के अधिकारीगण।

